SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 21 • ISSUE 03 • MAY 2022

हिन्दी मासिक

मई 2022

सच्चा राही

लखनऊ

सामाजिक एवं साहित्यिक

ईद खुशी का दिन

हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल.) जब मदीने तशरीफ लाये तो आप ने देखा कि यहाँ के लोगों ने साल में दो दिन खेलने और तफरीह के लिए खास कर रखे हैं। आप (सल्ल.) ने पूछा : यह दो दिन कैसे हैं ? लोगों ने बताया कि जाहिलीयत में हम लोग इन दोनों दिनों में खेलते और खुशियों मनाते थे। आप (सल्ल.) ने फरमाया अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिये इन दोनों को इन से बेहतर दो दिनों से बदल दिया है। एक ईदुल फित्र, दूसरा ईदुल अज़हा।

(अबू दाऊद)

एक प्रति ₹ 30/=

वार्षिक ₹ 300/=

सरपरस्त
हज़रत मौलाना सै० मुहम्मद राबे हसनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
☎ 0522–2740406 (8:00 am to 1:00 pm)
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
http://sachcha-rahi.nadwa.in/
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ
SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

मई, 2022 वर्ष 21 अंक 03

जुल्म से बड़ी बड़ी हुकूमतों के चराग़ बुझ गये

मैं इतिहास के अध्ययन के नतीजे में इस वास्तविकता तक पहुँचा हूँ कि दुनिया के धर्मों में सबसे ज़ियादा यदि किसी चीज़ पर सहमति है तो वह यह है कि जुल्म बुरी चीज़ है और वह इस दुनिया को पैदा करने वाले को पसन्द नहीं, और जहाँ तक इतिहास का सम्बन्ध है वह बताता है कि जुल्म की ज़ियादती से सामाजिक गतिविधियाँ रुक गईं और देश की उन्नति और विकास रुक गया।

(मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Composing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	07
ईदुल फ़ित्र ''इनआम'' और ''सम्मान''	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	09
कुर्आन व हदीस की रौशनी में हिजाब	प्रोफेसर अख़तरुल वासे	12
ये दीन ज़िन्दा है	हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0	14
इस्लामी अक़ीदे	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	16
भारत के अतीत में मुस्लिम	सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	18
अल्लाह के कलाम से हमारा	मौलाना ख़ालिद सैफुल्लाह रहमानी	20
मुआमलात और अख़लाक़	मौ0 सै0 जाफर मसऊद हसनी नदवी	23
रमज़ान के बाद करने के काम	जमाल अहमद नदवी	24
अच्छी आदतें और शुक्र	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	26
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	28
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन संभली रह0	30
रोज़ों के बाद करने के ज़रूरी काम	शैख़ अबरार अहमद नदवी	33
दिलों को जोड़ने वाला मंत्र	इं0 जावेद इक़बाल	34
आधुनिक चुनौती और इस्लाम	डॉ0 उबैदुर्रहमान नदवी	36
कुछ आम मालूमात	फ़ौज़िया सिद्दीक़ा	40
उर्दू सीखिए	इदारा	41
अपील बराए तामीर स्टॉफ क्वाटर्स	इदारा	42

क़ुअनि की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-तौबाः-

अनुवाद–

पहले भी वे फितने (उपद्रव) की खोज में रहे और आपके कामों में उलट फेर करते रहे यहाँ तक कि सच्चा वादा आ पहुँचा और अल्लाह का आदेश ग़ालिब हो कर रहा और वे कुढ़ते ही रह गये[1](48) और उनमें कुछ कहते हैं कि मुझे छुट्टी दे ही दीजिए और मुसीबत में न डालिए, अरे वे तो मुसीबत में पड़ ही गये और दोज़ख सारे इनकार करने वालों को घेर कर रहेगी[2](49) अगर आपको कोई भलाई प्राप्त होती है तो उनको बुरा लगता है और अगर आप किसी कठिनाई में पड़ जाते हैं तो वे कहते हैं कि हमने अपना काम पहले ही संभाल लिया है और वे खुश–खुश वापस जाते हैं[3](50) आप कह दीजिए कि हमको वही (तकलीफ़) पहुँचेगी जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दी है, वही हमारा मालिक है और ईमान वाले अल्लाह ही पर भरोसा करते हैं(51) आप कह दीजिए कि हमारे बारे में तुम्हें जिस चीज़ की प्रतीक्षा है वह तो दो भलाईयों में से एक है और हम तुम्हारे हक़ में इसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं कि अल्लाह या तो अपने पास से तुम्हें अज़ाब दे या हमारे हाथों से, तो तुम भी प्रतीक्षा करो हम भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा में हैं[4](52) यह भी कह दीजिए कि तुम खुशी खुशी माल खर्च करो या मारे–बाँधे मजबूरी में तुम से कदापि स्वीकार न होगा अवश्य तुम अवज्ञाकारी लोग हो(53) और उनके सदक़ों (दान) की स्वीकार्यता में केवल यही चीज़ रुकावट है कि उन्होंने अल्लाह और उसके पैग़म्बर का इनकार किया और नमाज़ में आते भी हैं तो काहिली के साथ और ख़र्च भी करते हैं तो नागवारी के साथ[5](54) तो उनका माल और उनकी संतान आपको अचंभे में न डाल दे अल्लाह यही चाहता है कि इसके द्वारा उनको दुनिया के जीवन में अज़ाब दे और कुफ़्र ही की हालत में उनकी जान निकले[6](55) और वे अल्लाह की कस्में खाते हैं कि वे तुम्हीं में हैं, वे तुम में हैं ही नहीं हाँ वे डरपोक लोग हैं(56) अगर उनको कोई शरण की जगह या गुफ़ा या घुस बैठने की कोई जगह मिल जाए तो उसी की ओर रस्सियाँ तुड़ा कर भागें[7](57) और उनमें कुछ ज़कात बाँटने में आपको ताना देते हैं तो अगर उसमें उनको मिल गया तो खुश हो गए और अगर न मिला तो बस उसी क्षण वे नाराज़ हो जाते हैं[8](58) और अल्लाह और उसके पैग़म्बर ने उनको जो कुछ दिया क्या अच्छा होता कि वे उससे खुश होते और कहते कि अल्लाह ही हमको काफ़ी है अल्लाह अपने कृपा से और उसके पैग़म्बर हमको दे देंगे और हम तो अल्लाह ही से लौ लगाए हैं(59) ज़कात तो अधिकार है फ़क़ीरों का और मिस्कीनों का और उसके काम पर जाने वालों का और उनका

जिनकी सहानुभूति करनी है और गुलामों (के आज़ाद करने) में और जो क़र्ज़दारों के (कर्ज़ चुकाने) में और अल्लाह के रास्ते में और यात्री (की आवश्यकता) में (खर्च किया जाये) अल्लाह की ओर से निर्धारित है और अल्लाह खूब जानता बड़ी हिकमत वाला है[9](60) और उनमें कुछ वे हैं जो पैग़म्बर को तक़लीफ़ पहुँचाते हैं और कहते हैं यह तो सब सुन लेते हैं आप कह दीजिए कि वे केवल तुम्हारे भले को सुनते हैं, अल्लाह पर ईमान रखते हैं और ईमान वालों की बात का विश्वास करते हैं और ईमान वालों के लिए सर्वा दया हैं और जो लोग भी अल्लाह के पैग़म्बर को तकलीफ़ पहुँचाते हैं उनके लिए दुखद अज़ाब है[10](61)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. हिजरत के बाद ही से मुनाफिक़ विभिन्न प्रकार से व्यवधान उत्पन्न करते रहे मगर जब बद्र में अल्लाह ने महान विजय प्रदान की तो मुनाफ़िक़ों के नेता अब्दुल्लाह पुत्र उबई ने कहा कि यह मामला अब रुकता हुआ नज़र नहीं आता तो बहुत से मुनाफ़िक़ों ने ऊपर ऊपर से मुसलमानों का रूप धारण कर लिया, लेकिन भीतर–भीतर से वे जलते ही रहे और नुक्सान पहुँचाने का प्रयास करते रहे।

2. मुनाफ़िक़ कहते हैं कि वहाँ ले जा कर हमको मुसीबत में न डालिए जब कि अल्लाह और पैग़म्बर की अवज्ञा करके उससे बढ़ कर मुसीबत में पड़ चुके हैं।

3. मुनाफ़िक़ों का तरीक़ा था कि अगर विजय होती और ग़नीमत का माल प्राप्त होता तो उनको अंदर ही अंदर बुरा लगता और अगर मुसलमान शहीद होते और कठिनाईयाँ आतीं तो आपस में खुश हो कर बिगुलें बजाते कि हम तो अलग ही रहे, हमारे सब काम ठीक हैं मुसीबत से हम बच गये।

4. तुम बर्बादी की आशा करते हो वह हमारे लिए ''शहादत'' है जो भलाई या तुम्हें ख़्याल होता है कि यह लोग शायद बच ही जाएं तो वह भी भलाई है और हम तुम्हारे निफ़ाक़ की वजह से आशावान हैं कि अल्लाह तुम्हें खुद ही अपमानित करे और अज़ाब दे या हमारे हाथों में तुम्हारा अपमान हो अतः हमें तुम्हें दोनों को एक दूसरे का परिणाम देखने के लिए प्रतीक्षारत होना चाहिए, फिर मालूम हो जाएगा कि किसका परिणाम बेहतर हुआ।

5. एक मुनाफ़िक़ ने बहाना किया था कि रूमी महिलाओं को देख कर फितने में पड़ जाऊँगा इसलिए नहीं जा सकता हाँ आर्थिक सहायता करता हूँ उसका और उस जैसे मुनाफ़िकों का उत्तर है कि कुफ़्र के साथ जो उनके दिल के भीतर है कोई भलाई का कार्य स्वीकार नहीं शेष नमाज़ में काहिली के साथ आना और अनिच्छा पूर्वक ख़र्च करना यह सब कुफ़्र के बाह्य लक्षण हैं।

6. मदीने के मुनाफ़िक़ों का यह हाल था कि अनिच्छा पूर्वक जेहाद आदि के अवसरों पर ख़र्च करते थे और उनकी संतान में कुछ सच्चे मुसलमान हो कर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ जेहाद में शामिल होते यह दोनों चीज़ें मुनाफ़िक़ों की सहमति के विरुद्ध थी इस प्रकार उनके माल व संतान दुनिया में भी उनके लिए अज़ाब

शेष पृष्ठ...11...पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

सबसे बेहतर तरीक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा है:–

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 खुत्बा दे रहे थे, बात करते–करते आपकी आँखें लाल हो गईं, आवाज़ तेज हो गई, गुस्सा बढ़ गया, ऐसा मालूम होता था कि आप किसी ऐसी फौज़ से डरा रहे हैं जो भोर या सायं (ही को) हमला करने वाली है, आप सल्ल0 ने फरमाया कि मेरी पैदाईश और क़यामत इस तरह करीब हैं जैसे शहादत (अंगूठे के बगल वाली अंगुली) और बीच की (सबसे बड़ी अंगुली) आप सल्ल0 ने फरमाया कि बेहतरीन कलाम अल्लाह की किताब है, और बेहतरीन तरीक़ा मुहम्मद सल्ल0 का तरीक़ा है, सबसे बुरा काम नई–नई बातें (बिदअतें) हैं, और हर बिद्अत गुमराही है। फिर फरमाया– मैं हर ईमान वाले के लिए उसकी जान से ज़ियादा हक रखता हूँ। अगर किसी आदमी ने माल छोड़ा तो वह उसके घर वालों के लिए है और जिसने कर्ज या बच्चे छोड़े उसकी ज़िम्मेदारी मुझ पर है। (मुस्लिम)

हर बिदअ़त गुमराही है:–

हज़रत इरबाज़ बिन सारिया रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने दिल को छू लेने वाली ऐसी प्रभावशाली नसीहत फरमाई जिससे हमारे दिल दहल गये, और आँख में आँसू आ गये। हमने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल0! यह नसीहत तो ऐसी है जैसे मानो हम आप से विदा हो रहे हैं तो आप हमें वसीयत कीजिए। आप सल्ल0 ने फरमाया: मैं तुम को तक़्वा की वसीयत करता हूँ, और सुन कर मानने की वसीयत करता हूँ, चाहे तुम पर एक हब्शी गुलाम ही हाकिम हो। तुम में जिसकी उम्र लम्बी होगी वह बहुत मतभेद देखेगा, तो चाहिए कि मेरी और खुलफा –ए–राशिदीन (आप सल्ल0 के प्रतिनिधि) की सुन्नत को अपने दाँतों से मज़बूत पकड़े और नई–नई बातों से बचे, दीन के अन्दर पैदा की जाने वाली हर नई चीज़ बिद्अत है, और बिदअत गुमराही है।

(अबू दाऊद–तिर्मिज़ी)

मानने में भलाई और न मानने में तबाही है:–

हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया: मेरी मिसाल और उस पैग़ाम की मिसाल जिसे दे कर अल्लाह ने मुझे भेजा है, उस आदमी की तरह है जो किसी क़ौम के पास आया, फिर कहा: ऐ लोगो! मैंने खुद लश्कर को देखा है, मैं खुलेआम डराने वाला हूँ, बचने के उपाय करो, इस ख़बर के बाद उस क़ौम (समुदाय) के कुछ लोगों ने उसकी बात मानी और रात रहे बहुत तड़के ही वहाँ से निकल लिये, आराम के साथ चल दिए और खतरों से बच गए। कुछ लोगों ने उस डराने वाले को झुठलाया और वहीं रुके रहे, सुबह होते ही लश्कर ने उस पर हमला कर दिया और उनकी ईंट से ईंट बजा दी। तो (पहले)

उस आदमी की मिसाल है जिसने मेरी बात मानी और जो कुछ मैं ले कर आया हूँ (यानी अल्लाह का हुक्म) उस पर अमल किया। और दूसरी उस आदमी की मिसाल है जिसने मेरी बात न मानी और मेरी लाई हुई हक़ बातों (शरीअत) को झुठलाया। (बुख़ारी)

हर हाल में किताब व सुन्नत पर अमल और हक़ बात कहने की जुर्अत और साहसः—

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हमने अल्लाह के रसूल सल्ल0 से बैअत की, कि हम सुनेंगे और मानेंगे, परेशानी में, आसानी में, दुःख में और सुख में, चाहे हमारे साथ बेइन्साफी की जाए या खुदगर्ज़ी (स्वार्थपरता)। और इस बात पर भी कि हम हुकूमत में हुकूमत वालों से न लड़ेंगे जब तक कि खुला हुआ कुफ़्र (ख़ुदा की नाफ़रमानी) न देख लेंगे और अल्लाह की तरफ़ से उस बारे में कोई दलील न होगी। और इस पर कि हक़ बात कहेंगे जहाँ भी होंगे, और अल्लाह की राह में धिक्कार करने वालों की धिक्कार से न डरेंगे।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

हदीस के अन्दर हुकूमत से मुराद मुसलमान हाकिम की हुकूमत है।

कामयाबी आप सल्ल0 ही की चाल चलने में हैः—

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने एक ऐसा काम किया जिसमें आसानी थी, कुछ लोगों ने उस आसानी को कम दर्जे का समझ कर न अपनाया, अल्लाह के रसूल सल्ल0 को उनके इस अमल की ख़बर पहुँची तो आप सल्ल0 ने तारीफ व तौसीफ (ईश्वर की प्रशंसा और गुणगान) की, फिर कहाः लोगों को क्या हो गया है कि वो उस अमल से कतराते हैं जिसको मैं खुद करता हूँ, खुदा की क़सम! मैं उनसे ज़ियादा अल्लाह को जानने वाला और उनसे ज़ियादा अल्लाह से डरने वाला हूँ।

(बुख़ारी)

इल्म किस तरह उठेगाः—

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल—आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते हुए सुना कि जब अल्लाह ने तुमको इल्म (ज्ञान) दिया है तो उसको इस अंदाज से नहीं उठाएगा कि लोगों के दिलों से दूर कर दे, बल्कि उलमा (मुस्लिम धर्म—गुरुओं) को उठा लेगा, और उलमा के उठ जाने से इल्म उठ जाता है, यहाँ तक कि जाहिल लोग रह जाएंगे, उनसे मस्अले (समस्याओं के समाधान) पूछे जाएंगे तो वो अपनी राय/विचार से मस्अलः बताएंगे, तो वो ख़ुद भी गुमराह होंगे और दूसरों को भी गुमराह करेंगे।

(बुख़ारी)

सुन्नत (आप सल्ल0 के विधि—विधान) से बेरुखी आप सल्ल0 से बेरुखी हैः—

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः जो मेरी सुन्नत (विधि) से मुँह मोड़ेगा वह हममें से नहीं है।

(मुस्लिम)

जिस ने दीन में नई चीज़ पैदा कीः—

उम्मुल मूमिनीन (ईमान वालों की माँ) हज़रत आइशा रज़ि0 बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः जिसने हमारे दीन में ऐसी चीज़ पैदा की जो उसमें से नहीं है तो वह ठुकरा दिए जाने के क़ाबिल है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

❖❖❖

सम्पादकीय

ईदुल फ़ित्र ''इनआम'' और ''सम्मान'' का दिन

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

''सच्चा राही'' का यह अंक आपके सामने उस समय आ रहा है जब आप रमज़ान के महीने से निकल कर ईद के महीने में आ गये, लेकिन उसकी यादें आपके ज़ेहन में बिल्कुल ताज़ा हैं, कहा जाता है कि ईद एक दिन होती है, लेकिन ''रमज़ान'' का हर दिन ईद होता है, ख़ुश क़िस्मत हैं अल्लाह के वह बन्दे जिन्होंने रमज़ान के हर दिन को ''ईद'' समझा, तमाम वह ईमान वाले भाई जिन्होंने रमज़ान का पूरा महीना अल्लाह व रसूल के आदेशानुसार गुज़ारा वह मुबारकबाद के हक़दार हैं, अल्लाह तआला एक महीने की निरन्तर मेहनत से प्रसन्न हो कर अपने मोमिन बन्दों को ईदगाह बुलाता है और वहां उनको गुनाहों से मुआफ़ी का प्रवाना देता है और कहता है कि यहाँ से बख़शे बखशाए जाओ।

ईदुल फित्र वास्तव में रमज़ान शरीफ़ का एक भाग है:–

हदीस शरीफ़ में आता है:– ''ईद के दिन जब मुसलमान नमाज़े ईद अदा करने के लिए ईदगाह या मस्जिद जाते हैं तो अल्लाह तआला अपने ख़ास फ़रिश्तों से फ़रमाता है– बतलाओ जो मज़दूर अपने जिम्मे किया हुआ काम पूरा कर दे उसको क्या मुआवज़ा मिलना चाहिए? फ़रिशते अर्ज़ करते हैं ख़ुदावन्दा! उसका मुआवज़ा यही है कि उसकी मज़दूरी पूरी पूरी दे दी जाए, अल्लाह तआला का इरशाद होता है, मेरे फ़रिश्तों! मैं तुमको गवाह बनाता हूँ कि उन लोगों के रोज़ों और रात की उनकी इबादत के बदले मैंने उनको अपनी ''रज़ा'' और मग़फ़िरत अता फ़रमा दी, रमज़ान शरीफ़ ऐसा महीना है यदि हमने भलीभांति नियमानुसार अल्लाह को राज़ी करने के लिए रोज़ा रखा और तरावीह और दूसरी नमाज़ें पढ़ीं तो उसका फ़ायदा दुनिया से आख़िरत तक मिलेगा और हमारी ज़िन्दगी पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा।

यह बातें रमज़ान से सम्बन्धित थीं। रमज़ान के बाद शव्वाल का महीना बहुत महत्वपूर्ण है, जो दीनी मदारिस और मकातिब से जुड़ा हुआ है, आम तौर पर इस्लामी मदरसों का तालीमी साल शव्वाल से शुरु हो कर शाबान के महीने में ख़त्म होता है, इधर लगभग ढाई तीन साल से देश के तमाम तालीमी इदारे बन्द थे, तालीम आन लाईन हो रही थी, यह सिस्टम ऊँचे क्लासों के लिए तो लाभदायक था लेकिन छोटे बच्चों के लिए बिल्कुल नहीं, अलहम्दुलिल्लाह हालात अनुकूल हो रहे हैं, उम्मीद है कि उचित समय पर मदरसे खुल जाएंगे और शिक्षा नियमानुसार प्रारम्भ हो जायेगी, कोरोना की वजह से बहुत सी समस्यायें और कठिनाइयाँ सामने आईं, मानव इतिहास में कोरोना जैसी विश्वव्यापी महामारी कभी नहीं आई थी, दुनिया ने दो बड़े विश्व युद्ध देखे थे, जिसमें लाखों और करोड़ों इनसान मौत के घाट

उतर गए थे, दुनिया की बड़ी ताक़तें आपस में टकरा गईं थीं, परन्तु कोरोना महामारी ने दुनिया का नक़्शा बदल दिया, कोई देश ऐसा नहीं बचा जहाँ कोरोना वायरस न पहुँचा हो, कोरोना की दो लहरें आईं थी, पहली लहर समाचार की हद तक थी, उसमें लोग सतर्क नहीं हुए और सोते रहे, दूसरी लहर पूरी ताक़त और कूवत से आई, हर तरफ़ ख़ौफ़ और दहशत का माहौल पूरा साल लॉक डाउन में चला गया। बेरोज़गारी और भुखमरी ने इनसानों को अधमरा कर दिया आम जनता ने एक दूसरे के साथ संवेदना और सहानुभूति का व्यवहार किया, परन्तु अहले सियासत ने पूरा खेल खेला यदि यह कहा जाय कि इन्सानी लाशों पर सियासत की गई तो ग़लत न होगा, जीवन का हर भाग प्रभावित हुआ, परन्तु शिक्षा के मैदान में जो घाटा और ख़सारा हुआ उसकी पूर्ति सम्भव नहीं, विशेष कर दीनी मदरसों का नुकसान बहुत ज़ियादा हुआ, जहां कुर्आन व हदीस की शिक्षा दी जाती है जिस का जानना हर मुसलमान बच्चे के लिए ज़रूरी है जिसको जाने बग़ैर इस्लामी ज़िन्दगी नहीं गुज़ार सकता, वर्तमान काल की सबसे बड़ी समस्या यह है कि इन्सान दुनिया में अपने आने और रहने का उद्देश्य भूला हुआ है, यह बहुत बड़ा धोखा है, इनसान दुनिया में एक निश्चित समय के लिए आया है, यह निश्चित समय गुज़ार कर अपने वास्तविक स्वामी अल्लाह के पास पहुंच जाएगा, जहाँ उसको अपनी दुनियावी ज़िन्दगी का हिसाब व किताब देना होगा अल्लाह ने फ़रमाया ''और तुम्हारे लिए एक निश्चित अवधि तक ज़मीन ठहरने की जगह और जीवन सामग्री है और वहीं तुम को जीना और मरना है, और उसी में से तुम को आख़िर कार निकाला जाएगा''।

(सूरः अल–आराफ 24–25)

कोरोना की वजह से जानी व माली हर प्रकार का नुक़सान हुआ परन्तु दीनी मदरसों के बन्द होने की वजह से ईमानी और दीनी नुक़सान हुआ जिस पर दुनिया व आख़िरत की कामयाबी निर्भर है। इन मदरसों में कुर्आन व हदीस द्वारा जो शिक्षा दी जाती है उसका मौलिक उद्देश्य यही है कि इन्सान अपने पालनहार और अपने वास्तविक स्वामी अल्लाह का सच्चा वफ़ादार बने, यदि इन्सान अल्लाह का सच्चा वफ़ादार होगा, तो वह अल्लाह और उसके बन्दों के हुक़ूक़ अदा करने वाला होगा, किसी के साथ अन्याय और अत्याचार नहीं करेगा। वर्तमान काल तमाम उन्नतियों के बावजूद पतन के रास्ते पर तेज़ी के साथ चल रहा है, आज का इन्सान केवल अवसर वादी और भौतिक वादी है, कहने को वह इन्सान है लेकिन उसके दिल में दूसरे इन्सान के लिए सहानुभूति की कोई भावना नहीं है, जिसकी वहज से पूरा समाज दूषित हो गया है, कुर्आन ने सदियों पहले ऐसे माहौल की तस्वीर ख़ींची है, ''थल और जल में बिगाड़ पैदा हो गया है लोगों के अपने हाथों की कमाई से''।

(सूरः रूम आयत नं0 41)

प्रश्न यह है कि वह कौन सी पाठशाला और विद्यालय है जहाँ ऐसी शिक्षा दी जाती हो जिसके पाठ पढ़ने से ऐसे इन्सान पैदा होते हों जो वास्तविक रूप में इन्सान कहलाने के

हक़दार हों, इन्सान की परिभाषा क्या है? इन्सान वही है जिसके कर्म और कथन से दूसरे इन्सान को नुक़सान न पहुँचे, दूसरों के साथ उच्चकोटि का व्यवहार करे, घृणा और नफ़रत से हमें दूर रह कर प्रेम और भाई चारे का माहौल बनाना चाहिए, हर व्यक्ति के दिल में जब यह भावना होगी तो एक अच्छा समाज वजूद में आयेगा, जो शान्तिपूर्ण होगा, अल्लाह के अन्तिम रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फ़रमाया ''ऐ अल्लाह के बन्दो भाई भाई बन कर रहो,'' देश के कोने कोने में यह दीनी मदरसे जो छोटे भी हैं और बड़े भी हैं, उनमें अल्लाह की किताब कुर्आन शरीफ़ और उसके अन्तिम रसूल सल्ल0 की हदीस शरीफ़ की शिक्षा दी जाती है, ताकि उसको पढ़ कर अपने लिए और दुनिया के लिए हानिकारक न हों लाभदायक हों, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया–

करो मेहरबानी तुम अहले ज़मीं पर
ख़ुदा मेहरबां होगा अर्शे बरीं पर

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा.....

बन गये थे और अल्लाह ने उनको इसी हाल में परेशान कर दिया था कि इसी में उनकी जान निकले।

7. केवल फ़ायदा हासिल करने के लिए अपने को मुसलमान बताते हैं, ज़रा भी उनको सिर छिपाने का अवसर मिल जाए और इस्लामी सरकार का भय न रहे तो वे पूरी तरह कुफ़्र में भागें इसलिए कि उसी में उनके दिल रंगे हुए हैं।

8. धन लोभी हैं ज़रा कम मिले तो ताना देने लगते हैं फिर आगे ईमान वालों का गुण बयान किया जा रहा है कि उनका उद्देश्य अल्लाह की प्रसन्नता है।

9. बात साफ़ कर दी गई कि ज़कात ख़र्च करने की जगहें निर्धारित हैं जो आठ हैं, पैग़म्बर को यह अधिकार नहीं कि वह जिसको चाहे दे दे–

(1) फ़क़ीरः जिनके पास कुछ न हो। (2) मिस्कीनः जिनके पास आवश्यकता भर भी न हो। (3) आमिलीनः जो सरकार की ओर से ज़कात वसूलते हैं। (4) मुअल्लफतुल कुलूबः इस्लाम लाने वाले लोग जिनके मनोयोगय (दिल जमई) की आवश्यकता हो। (5) अर्रिकाबः गुलाम आज़ाद कराने में। (6) ग़ारिमीनः जो किसी का कर्ज़ अपने ज़िम्मे ले लें या स्वयं किसी मुसीबत का शिकार हो जाएं। (7) फी सबीलिल्लाहः जो अल्लाह के रास्ते में जेहाद वग़ैरह में व्यस्त हों। (8) इब्नुस्सबीलः यात्री जो यात्रा में परेशान हो चाहे घर का धनी हो।

10. मुनाफ़िक़ आपस में बैठ कर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में बुरा भला कहते जब कोई कहता कि बात पहुँच जाएगी तो जवाब देते कि हम जा कर झूठी अर्थापन (तावीलें) करके बरी हो जाएंगे, आप तो कान ही कान में जो सुनते हैं मान लेते हैं इसी का जवाब दिया जा रहा है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सब जानते हैं वह तुम्हारे बुरे भले को सब सुन लेते हैं और तुम्हारा भाण्डा नहीं फोड़ते वरना उनका विश्वास तो सिर्फ ईमान वालों की बातों पर होता है।

❖❖❖

क़ुर्आन व हदीस की रोशनी में हिजाब की अहमियत

देश की गंगा जमुनी सभ्यता और आपसी महब्बत के माहौल को बिगाड़ने वालों ने एक शान्तिपूर्ण रिवाज को ख़ुवाह मख़ुवाह अशान्ति पैदा करने का ज़रिया बना दिया-

प्रोफेसर अख़तरुल वासे

पिछले थोड़े दिनों से देश की मीडिया में स्कूल की बच्चियों के हिजाब को अनावश्यक तौर पर विवाद का विषय बना दिया गया है। पूरी मीडिया उसके उन पहलुओं पर तर्क वितर्क पर उतर आई है जो न सामाजिक एकता के लिए उपयोगी है और न व्यक्तिव स्वतंत्रता और धार्मिक स्वतंत्रता के लिए फायदेमन्द है बल्कि उसके साथ ही यह देश की अच्छी छवि को प्रभावित कर रही है, हिजाब के सम्बन्ध में कुर्आन व हदीस के स्पष्ट दृष्टिकोण को तोड़ मरोड़ कर परोस रहे हैं और भोली भाली जनता को गुमराह कर रहे हैं।

हम यहाँ इस लेख में हिजाब के सम्बन्ध में कुर्आन व हदीस के दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से पेश करना चाहते हैं क्योंकि उसे वास्तविक रूप में देखना और जानना अति आवश्यक है, और हमारे देश के संविधान ने प्रत्येक धर्म की तरह इस्लाम धर्म के अस्तित्व को भी ज़मानत और सुरक्षा उपलब्ध कराई है। हम यहाँ हिजाब सम्बन्धित इस्लामी तत्व को स्पष्ट करने के लिए कुछ प्वाइन्ट रखते हैंः—

1. हिजाब, अरबी भाषा का शब्द है उसका अर्थ पर्दा करना है, इस समय सर को ढाँपने के लिए इस्तेमाल होने वाले कपड़े को हिजाब कहा जा रहा है, जब कि इस शब्द का शुद्ध अर्थ केवल परदा करना है, कुर्आन करीम में ''हिजाब'' का शब्द परदा और ओट के अर्थ में इस्तेमाल हुआ है, एक जगह कुर्आन की आयत है कि अल्लाह किसी इन्सान से बात पर्दा या ओट के पीछे से करता है।

(सूरः शूराः 51)

सूरः मरयम में है कि हज़रत मरयम ने लोगों से पर्दा (हिजाब) कर लिया था। (17:19)।

क़यामत के बारे में कुर्आन में है कि जन्नत वालों और दोज़ख़ वालों के बीच एक पर्दा (हिजाब) डाल दिया जायेगा। (सूरः आराफ—46)।

इस तरह कुर्आन में सात जगहों पर हिजाब शब्द का प्रयोग पर्दा और ओट के अर्थ में हुआ है। यह बात समझने की है कि एक भाषा का शब्द दूसरी भाषा में एक जैसा अर्थ नहीं रखता है, मिसाल के तौर पर उर्दू में हम औरत का शब्द ख़ातून के लिए बोलते हैं, अरबी भाषा में महिला के लिए ''इमरातुन'' और ''निसाउन'' के शब्द हैं औरत शब्द अरबी में दूसरा अर्थ रखता है।

2. इस्लाम ने शरीर के अंगों को छुपाने और पर्दा करने का आदेश दिया है, यह आदेश अनिवार्य है, वैकल्पिक नहीं है, यह आदेश मर्द के लिए भी और औरत के लिए भी, इसे क़ानूनी भाषा में ''सतर को छुपाना और पारिभाषिक तौर पर ''सतरे औरत'' कहते हैं अर्थात उन अंगों को छुपाना जिनके छुपाने का आदेश है, शरीर के यह अंग मर्द और औरत दोनों के लिए अलग, अलग हैं। सतर (गुप्तांग) के आदेश बालिग़ होने के बाद अनिवार्य हो जाते हैं।

3. औरत जब घर से बाहर निकलेगी तो उसके लिए सतर यानी पर्दा करने के शरीर के अंग क्या हैं? इस सम्बन्ध से में इस्लामी क़ानून निम्नलिखित हैंः—

० घर के महरम रिश्तेदारों के सामने औरत अपने चेहरे, सर, गरदन, पाँव, पिन्डली, हाथ और बाजू खुला रख सकती है।

० अजनबी अपरिचित मर्दों के सामने अपने दोनों हाथ और चेहरा खुला रख सकती है, यह राय इमाम अबू हनीफ़ा और कुछ उलमा की है, दूसरे उलमा की राय है कि सारा शरीर पर्दा है, केवल आँख खुला रख सकती है, ताकि वह आराम से चल सके, मालूम हो कि मतभेद चेहरा खोलने के सम्बन्ध में है, सर और बाल खोलने की इज़ाज़त कहीं नहीं है।

4. इस आदेश के सम्बन्ध में कुर्आन और हदीस में खुला हुआ हुक्म है, कुर्आन के हुक्म की व्याख्या हदीस से होती है इसलिए किसी अर्थ को समझने के लिए कुर्आन और हदीस को मिला कर देखना अनिवार्य है, इसलिए शरीअ़त कुर्आन और हदीस के बयान किये हुए आदेशों को कहते हैं और इसके साथ साथ पैग़म्बरे इस्लाम सल्ल0 के बताये तरीक़–ए–इजतिहाद से निकाले गये आदेश भी इस्लामी शरीअत का हिस्सा होते हैं, यह इजतिहाद ख़ुद सहाबा ने फिर उनके शागिर्द यानी ताबिईन फिर उनके शागिर्द तबा ताबिईन ने किये, और यह सिलसिला उस ज़माने से जारी है, और इसमें मतभेद होता है।

5. कुर्आन ने दो जागहों पर निश्चित तौर पर औरतों के सतर और पर्दा करने के आदेश बताये हैं, उन दो जगहों के अलावा और दूसरे मुक़ामात पर भी जनरल अहकाम बयान किये गये हैं एक सूरः नूर में हुक्म है और दूसरा हुक्म सूरः अहज़ाब में है। सूरः नूर 18वें पारे में है, उसमें मर्द और औरत दोनों को निगाहें नीची रखने और शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने का हुक्म दिया गया है उसके बाद औरतों को विशेष तौर पर हुक्म दिया गया है कि वह अपनी बनाव श्रृंगार वाली वेश भूषा को अपने किन किन रिश्तेदारों के सामने नुमायाँ कर सकती हैं और दूसरे मर्दों के सामने नहीं। इसी प्रसंग में सूरः नूर में औरतों से यह भी कहा गया कि वह अपनी ओढ़नी अपने सीनों पर डालें, खिमार दोपट्टे और ओढ़नी को कहते हैं, इसका बहुवचन ''ख़ुमुर'' है, ''जेब'', सीना और गरेबान को कहते हैं, इसका बहुवचन ''जुयूब'' है। इस आयत में दो बातों का हुक्म हुआ, एक बनाव श्रृंगार वाली वेश भूषा को छुपाने का, दूसरे सीनों पर दोपट्टा डालने का, इसी तरह सूरः अहज़ाब में ज़िक्र है। कुर्आन की दोनों आयतों के पेश नज़र हुक्म यह बनता है कि औरतें, अजनबी अपरिचित मर्दों के सामने अपनी ज़ीनत श्रृंगार को छुपायें, अपने सीने पर दोपट्टा डालें और अपने आप पर घूँघट निकाल लें। अब इसके साथ हदीस शरीफ़ देखिए, हज़रत आइशा रज़ि0 कहती हैं कि हज़रत असमां विन्त अबू बकर, हुजूर अकरम सल्ल0 के पास आईं, उनके बदन पर कपड़े बारीक थे, तो हुजूर अकरम सल्ल0 ने फ़रमाया ऐ असमाँ! ''जब बच्ची बालिग़ हो जाये तो उसके बदन का सिर्फ़ हाथ और चेहरा नज़र आना चाहिए''।

(अबू दाऊदः हदीस नं0 4104)

इस उद्देश्य और आदेश की तामील जिस सूरत में हो या जिस कपड़े से हो वही चाहिए। आज जो कपड़ा प्रचलित है वह स्कार्फ या हिजाब के नाम से जाना जाता है और उससे सर ढाँप लिया जाता है इस वज़ाहत

शेष पृष्ठ...17...पर

ये दीन ज़िन्दा है और ज़िन्दों से क़ायम है

हज़रत मौलाना सै0 अबुल हसन अली नदवी रह0

हिन्दी अनुवादः आफताब आलम नदवी खैराबादी

ये दीन ज़िन्दा है और ज़िन्दों से कायम है और दीन को ज़िन्दा लोगों की ज़रूरत है इस दीन के लिए अल्लाह तआला ने ये उसूल मुक़र्रर और मुक़द्दर किया है कि इसके लिए ज़िन्दा लोग बराबर पैदा होते रहेंगे, कोई पेड़ उस वक़्त तक हरा भरा और ज़िन्दा नहीं समझा जाता जब तक वो फ़लदार न हो जाये, इसमें नई नई पत्तियाँ और नये नये फूल न खिलते रहते हों ये दीन ज़िन्दा है और जिन्दा इन्सानों के लिए है और इसको जिन्दा लोगों की ज़रूरत है, वो दीन मिट गये, ख़त्म हो गये, जिन्होंने रूहानियत, इल्म, फ़िक्र और क़यादत के मैदान में, ज़िन्दा लोग पैदा करने बन्द कर दिये, इन्सान ज़िन्दा लोगों से मुतअस्सिर होता है, चिराग़ से चिराग जलता रहा है और चिराग़ से चिराग़ जलते रहना चाहिए और अगर इस उम्मत को बाक़ी रहना है तो इस उम्मत के लिए ज़रूरी है कि वह ज़िन्दा लोग पैदा करे और शिक्षा–दीक्षा, सुधार, विचार और रूहानियत के समस्त क्षेत्रों में बाक़ी व ज़िन्दा रहने के नये नये उपाय करती रहे। हदीस शरीफ़ में आता है कि मेरी उम्मत रहमत की फुहार की तरह है, कोई नहीं कह सकता कि इसके शुरु के क़तरे मुर्दा ज़मीन के लिए ज़ियादा ज़िन्दगी बख्श हैं या बाद के।

वास्तव में बुज़ुर्गों के कारनामे, बुज़ुर्गों की पायेदारी और बुज़ुर्गों की कुर्बानियाँ आने वाली नस्लों के लिए बेहतरीन सरमाया हैं, और वे हयात व ज़िन्दगी का पैग़ाम देने वाली हैं, हमने हमेशा कहा और माना कि हमारे बुज़ुर्ग ऐसे थे, इनकी याददाशत इतनी मज़बूत थी, इनका इल्म इतना बुलन्द था, वो ऐसे ग़ौर व फ़िक्र वाले आलिम थे ये सब सर आँखों पर लेकिन इतना काफ़ी नहीं।

इस दीन के लिए अल्लाह फ़ैसला कर चुका है कि ये दीन क़यामत तक के लिए है इसी लिए इसको ज़िन्दा लोगों की ज़रूरत है, रूहानियत भी ज़िन्दा इन्सानों ही से क़ायम है, बड़े–बड़े बुज़ुर्गों और इल्मे दीन के माहिरीन की तहक़ीक़ भी यही है कि तज़किया व इल्म बातिन भी ज़िन्दा इन्सानों ही से हासिल किया जाता है और ज़िन्दा इन्सानों ही से इसकी तकमील होती है, वरना ऐसे ऐसे बुलन्द मर्तबा लोग गुज़रे है कि इनमें से एक काफ़ी था, लेकिन वो कहते हैं कि ज़िन्दगी में हरकत व आगे बढ़ने की सलाहियत है ज़िन्दगी में विभिन्नता है, अभी एक रंग आया एक रंग गया, अभी एक मर्ज़ पैदा हुआ और एक मर्ज़ गया, इसलिए जिनका तअल्लुक़ इस ज़िन्दा जगत व संसार से टूट चुका है वो इन चलते फिरते और ज़िन्दा इन्सानों की रहनुमाई नहीं कर सकते, रहनुमाई ज़िन्दा इन्सानों ही से हासिल होती है किसी नस्ल में सब कुछ है बड़े बड़े कुतुब ख़ाने है, तारीख़ के बड़े बड़े ज़ख़ीरे हैं लेकिन ज़िन्दा हस्तियाँ नहीं हैं, जिनके दिलों से ज़िनकी कोशिश व फ़िक्र से, जिनकी दूरगामी सोच से हम रौशनी हासिल करें।

हदीसे सहीह में है कि ''अल्लाह तआला हर सौ बरस में एक मुजद्दिद (वह कामिल बुज़ुर्ग जो हर सदी के शुरु में पैदा होता है और मुसलमानों के अन्दर फैली दीनी व अख़लाक़ी बुराईयों के सुधार की कोशिश

करता है) भेजता रहेगा, जो इस दीन को ताज़ा कर देगा और तजदीद का फर्ज़ अन्जाम देगा'' इसका मतलब ये नहीं की इस वक़्त तो वो दीन को ताज़ा कर देगा फिर वो सिलसिला ख़त्म हो जायेगा, बल्कि इसका मतलब ये है कि अर्से तक इसका वजूद रहेगा, और इसका मतलब ये नहीं कि आये और हफ़्ता दो हफ़्ता के लिए दीन का चर्चा हो गया और चले गये, इनमें से किसी भी बुज़ुर्ग का हाल पढ़ें किसी का असर सौ बरस रहा और कुछ ऐसे बुज़ुर्ग पैदा हुए जिनका असर सदियों तक रहा। रेलवे लाइन पर एक छोटी गाड़ी चला करती थी, जिसको ट्राली कहते थे, लोग इसको ढकेलते थे, फिर इस पर बैठ जाते थे और वह चलती थी और फिसलती रहती थी, जब वो रुकने लगती थी तो फिर उतर कर धक्का देते थे, और बैठ जाते थे, इससे लाइन का मुआइना होता था, इस उम्मत की गाड़ी भी इसी तरह समझिये, और इसको धक्का देने वाले इस उम्मत के उलमा और बड़े बड़े बुज़ुर्गाने दीन और मुजद्दीन हैं, ये इसको ठेल देते हैं और वह ये ख़ुद अपने पहियों पर चलती है ये नहीं की चलाते ही रहते हैं, गाड़ी खुद चलेगी अपने पहियों पर, लेकिन इसको धक्का और चलाने के लिए ज़िन्दा इन्सानों की ज़रूरत है, वो कोई टेकनिकल चीज़ नहीं है, जिन्दा इन्सान इसको बढ़ाते हैं, और धक्का देते हैं और वो अपने पहियों पर चलती है, क्योंकि ट्राली के लिए दो चीज़ों की ज़रूरत है, पटरियों में इतनी चिकनाहट और पहियों में इतनी हरकत और तेज़ी, और चलने की इतनी सलाहियत हो कि वो चल सके, और आदमियों के हाथों में इतनी ताक़त हो कि वो इसको ठेल सकें और मुसाफ़िर जो बैठे हों वो बैठे रहें और जम जायें इसी तरह उम्मत का मामला है कि वह जब ठहर जाती है और बुरे कामों में पड़ जाती है तब कोई अल्लाह का महबूब बन्दा आता है और उसको धक्का देता है और फिर वो खुद चलती है और कुछ दूर तक चली जाती है।

मैं मुजद्दिद अल्फसानी रह0 और शाह वलीउल्लाह साहब रह0 दोनों को इस दौर का मुजद्दिद समझता हूँ कि जहाँ कहीं भी इल्मे दीन है, जहाँ कहीं भी सुन्नत की दावत है, जहाँ कहीं भी शिर्क व बिदअत से बचने का जज़बा और उससे नफ़रत है ये इन दोनों की कोशिशों का नतीजा है, देखिए एक ऐसा भी इन्सान था जिसने इस ज़ोर से धक्का दिया कि उम्मत की गाड़ी साढ़े तीन सौ साल से बराबर चल रही है, और अल्लाह ही खूब जानता है कि कितना चले, फिर कोई और अल्लाह का बन्दा पैदा हो और उसके धक्के से और कितना चले, हज़रत शाह वली उल्लाह साहब रह0 का पूरा ख़ानदान हज़रत मुजद्दिद अलफ़सानी साहब रह0 के सौ डेढ़ सौ बरस के बाद पैदा हुआ और उनके काम के असरात तेहरवीं सदी के शुरुआत में ज़ाहिर हुए, मेरे कहने का मतलब ये है कि तमाम मदारिस और तमाम उलमा का कर्तव्य है कि ज़िन्दा लोग पैदा करते रहें।

आज इस्लामी दुनिया की सबसे बड़ी ज़रूरत है कि ऐसे उलमा मुल्क में रहें कि वे नये मसायल समझ सकें और नये मसायल के हल पेश कर सकें और इसमें वो शरीअ़त की मदद से किताब व सुन्नत की मदद से उसूले फ़िक़्ह और फ़िक़्ह की मदद से रहनुमाई कर सकें, इसलिए जहाँ और चीज़ों की ज़रूरत है, वहाँ एक बड़ी ज़रूरत ये है कि ऐसे विद्वान उलमा पैदा हों जो वक़्त की ज़रूरत को समझ सकें और सही रहनुमाई कर सकें।

(तामीरे हयात 15 अगस्त 2001 से ग्रहीत)

❖❖❖

इस्लामी अक़ीदे (विश्वास)

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

दुआः—

दुआ भी खालिस इबादत का अमल है और अल्लाह के साथ खास है, अगर किसी और से दुआ की जाती है तो ये शिर्क है, इससे पहले आयत में साफ़ गुज़र चुका कि *"बस अल्लाह के साथ किसी को मत पुकारो''।*

(सूरः अल—जिन्न—18)

आयत में ये बात साफ हो गई कि अगर कोई अल्लाह ही से दुआ करता है, जरूरत के वक्त उसको पुकारता है मगर कभी कभी किसी नबी या वली को भी उस में शरीक कर लेता है और उनसे दुआ करने लगता है तो ये भी शिर्क है और अल्लाह ने इससे मना किया है।

इस ज़माने के मुशरिकों वाले कामों में से ये अमल भी है कि लोग कब्रों के पास जा कर उनसे दुआएं करते हैं, किसी कब्र वाले से औलाद मांगते हैं, किसी से रोजी मांगते और अपनी दूसरी जरूरतें मांगते हैं और समझते हैं कि ये हमारा काम बना देंगे, ये सब मुशरिकों वाले काम हैं, बहुत से लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दुआएं मांगते हैं और आपको ''सारी हाजतें पूरी करने वाला'' समझते हैं, ये भी शिर्क का अमल है, दुआ उन कामों में से है जो खालिस अल्लाह के लिए हैं, अनेकों आयतों में अल्लाह ने साफ साफ फरमा दिया है कि दुआ सिर्फ उसी से मांगो, जरूरत के वक्त सिर्फ उसी को पुकारो, इरशाद होता है *''अल्लाह के अलावा किसी को मत पुकारो जो न तुम्हें फायदा पहुंचा सकता है और न तुम्हें नुकसान पहुँचा सकता है।''*

(यूनुसः106)

एक जगह इरशाद है और जिनको तुम उसके अलावा पुकारते हो वो गुठली के छिलके के भी मालिक नहीं, अगर तुम उन्हें पुकारो तो वो तुम्हारी दुआ सुन नहीं सकते और अगर सुन भी लें तो तुम्हारी बात पूरी नहीं कर सकते और क़यामत के दिन वो खुद तुम्हारे शिर्क का इंकार कर देंगे और आपको उस बताने वाले की तरह कोई बता नहीं सकता।

(सूरः फातिरः 13—14)

जिन औलिया अल्लाह से या नबियों से दुआएं की जाती हैं, सबसे पहली बात ये कि वो जरूरत पूरी नहीं कर सकते, दूसरे वो क़यामत में दुआ करने वालों से अपनी दूरी जाहिर करेंगे कि ये सब उनकी अपनी बनाई हुई बातें हैं हमने उनको इसका हुक्म नहीं दिया था। एक जगह अल्लाह का इरशाद है— *''और उस से बढ़ कर गुमराह कौन होगा जो अल्लाह को छोड़ कर ऐसों को पुकारे जो क़यामत तक उस का जवाब न दे सकें और उस की पुकार का उनको पता ही न हो।*

(सूरः अहकाफ—5)

हासिल ये है कि दुआ किसी से नहीं की जा सकती सिवाए अल्लाह के और अगर किसी दूसरे से दुआ की जाएगी तो ये शिर्क है, एक हदीस में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहां तक फरमाया *''तुममें से हर एक अपनी ज़रूरत अल्लाह से मांगे यहां तक कि अगर जूते का फीता टूट जाए तो वो भी खुदा से मांगे।''*

(मुसनद अहमद— 1079)

दीन व दुनिया की कोई छोटी बड़ी ज़रूरत हो वो अल्लाह ही से मांगी जाए, उसी से दुआ की जाए, किसी के बारे में ये समझना कि ये आलिम–ए–ग़ैब है, हमारी ज़रूरत पूरी कर देंगे ये शिर्क है, हाँ बुजुर्गों से दुआ कराने की न सिर्फ़ इजाज़त है बल्कि इसको बेहतर करार दिया गया है, लेकिन यहां भी इस बात को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि वो भी सिर्फ दुआ करते हैं, अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाते हैं, अल्लाह तआला के वो करीबी बंदे हैं, इसलिए अल्लाह की खास रहमत मुतवज्जेह होती है और उनकी ज़्यादातर दुआएं कुबूल होती हैं मगर ये समझना कि अल्लाह ताला उनकी दुआ रद्द कर ही नहीं सकता, ये मुशरिकों वाला अकीदा है,

रसूल–ए–मकबूल सल्ल0 से बढ़ कर न कोई हुआ है न होगा, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चाहते थे कि अबू तालिब इस्लाम कुबूल कर लें मगर अल्लाह का फैसला ये न था, तो वो आप की चाहत और दुआ के बावजूद इस्लाम नहीं लाए और अल्लाह ताला ने आयत नाजिल फरमाई *''आप जिसको चाहें हिदायत नहीं दे सकते, हाँ अल्लाह जिसको चाहता है हिदायत देता है।''*

(सूरः कसस– 56)

इस से बात साफ हुई कि अल्लाह ताला दुआ कुबूल करने पर मजबूर नहीं है वो मुख़्तार–ए–कुल है, जिसकी चाहे दुआ कुबूल करे और जिसकी चाहे रद्द कर दे।

❖❖❖

कुर्आन व हदीस की ..... के बाद यह बात पूरी तरह साफ़ हो जाती है कि हिजाब या स्कार्फ़ लगाना कुर्आन और हदीस के आदेश के अनुकूल है और उससे मना करना कुरआन के हुक्म पर अमल करने से रोकना है।

महिलाओं के लिए सर ढाँपने और हया व शर्म के तहत चेहरा भी ढाँपने का रिवाज हमारे देश में हज़ारों वर्ष से है और हर कम्यूनिटी के अन्दर है, हमारे देश में कई प्रान्तों के अन्दर हिन्दू महिलाएं सर ढाँपती हैं और घूँघट निकालती हैं, सिख महिलाएं सर ढाँपती हैं, बल्कि गुरुद्वारा के अन्दर कोई मर्द भी सर ढाँपे बग़ैर नहीं जा सकता है। कई प्रान्तों और क्षेत्रों में ईसाई नन और महिलाएं सर को ढाँपती हैं। क्योंकि यह उनके मज़हब और कलचर में है, यही बात मुस्लिम महिलाओं के यहाँ भी है, आज से नहीं सैकड़ों वर्षों से मुस्लिम औरतें सर को ढाँपती रही हैं, स्कूलों और कालेजों के अन्दर कई नसलों ने इसी तरह सर ढाँप कर अपनी शिक्षा पूर्ण की हैं। आज भी स्कूलों और कालेजों के अन्दर ईसाई नन सर ढाँप कर पढ़ाती हैं।

मौजूदा हिजाब प्रकरण में कुछ चरमपंथियों और मुल्क की गंगा जमुनी तहज़ीब और आपसी मेल व महब्बत के माहौल को बिगाड़ने वालों ने ज़माने से चले आ रहे एक शान्तिपूर्ण रिवाज़ को ख़ुवाह मख़ुवाह अशान्ति पैदा करने का ज़रिया बनाया है और वह देश के शान्ति पूर्ण माहौल को ख़राब कर रहे हैं, आवश्यकता है कि ऐसे शर पसन्द (चरमपंथियों) पर लगाम लगाई जाये।

(दैनिक इंकलाब उर्दू 20.02.22 से ग्रहीत)

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

भारत के अतीत में मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

पराजित जनता से सद्व्यवहार :–

नेरून के घेराव के बाद जब घिरे हुए लोगों ने उसके क़िले का दरवाज़ा खोल दिया तो इसकी सूचना क़ासिम ने हज्जाज को दी। उसने तुरन्त लिखा कि जो तुमसे शरण चाहते हैं उनको शरण दो, यदि किसी स्थान के बड़े लोग आकर तुमसे मिलें तो उनको बहुमूल्य शॉल ओढ़ा कर सम्मानित करो और उनको पुरस्कार देना अनिवार्य समझो, बुद्धि को अपना नायक बनाओ ताकि उस क्षेत्र के सरदार और बुद्धिमान लोग तुम्हारे कथन और कर्म पर भरोसा करें। मुहम्मद बिन क़ासिम ने इन निर्देशों पर अमल किया और नेरून के शासक को सन्देश भेजा कि अब जबकि क़िले का दरवाज़ा खुल गया है तो तुम्हारे सम्मान में कोई कमी नहीं की जायेगी। इस सन्देश के बाद नेरून का शासक बहुत से उपहार ले कर मुहम्मद बिन क़ासिम के पास आया। फिर अपने क़िले में वापस हो कर मुहम्मद बिन क़ासिम का आतिथ्य–सत्कार किया और लगातार उसके पास उपहार भेजता रहा। सेना में अनाज की कमी थी, जिसको उसने पूरा किया।

मुहम्मद बिन क़ासिम के इस व्यवहार का प्रभाव सिन्ध के दूसरे वासियों पर भी पड़ा, जब वह सेविस्तान की ओर बढ़ा तो उसका शासक राजा दाहिर का भतीजा बझरा या विजय राय था। वहाँ के बौद्धों और दूसरे लोगों ने बझरा के पास एक प्रार्थना–पत्र भेजा कि हमको मालूम है कि मुहम्मद बिन क़ासिम के पास अमीर हज्जाज का फ़रमान है कि जो व्यक्ति उससे शरण माँगे उससे समझौता करके उसको अपनी पनाह में ले लो। अरब वाले बहुत वफ़ादार हैं, वह जिस बात का वादा कर लेते हैं उसको पूरा करते हैं। बेहतर है कि हम उनसे समझौता कर लें। बझरा ने लोगों की बातें न मानी, लड़ाई हुई और वह पराजित हुआ। जिसके बाद सेविस्तान के लोगों ने मुहम्मद बिन क़ासिम का आज्ञापालन स्वीकार कर लिया सेविस्तान तक इस्लामी सेना को पहुँचाने में नेरून के शासक ने हर संभव सहायता की।

मुहम्मद बिन क़ासिम सेविस्तान से सीसम की ओर बढ़ा तो रास्ते में राजा दाहिर के अधीन एक शासक काका कोतक ने बिन क़ासिम को राजा स्वीकार कर लिया। धर्म के अनुसार वह बौद्ध था, जब अपने अधीन सरदारों और विश्वासपात्रों के साथ मुहम्मद बिन क़ासिम के पास पहुँचा तो उसने उनका बहुत सम्मान किया। मुहम्मद बिन क़ासिम ने उससे पूछा, ऐ हिन्दुस्तान के नायक! तुम्हारे यहाँ शॉल ओढ़ाने की क्या रीति है? काका ने उत्तर दिया कि हमारे यहाँ यह रीति है कि शॉल पाने वाले को कुर्सी दी जाती है। उसको रेशम के हिन्दू परम्परा के कपड़े पहनाए जाते हैं और उसके सिर पर पगड़ी बाँधी जाती है। मुहम्मद बिन क़ासिम ने काका को उसी तरह शॉल प्रदान किया। जिससे आस–पास के लोगों पर आज्ञापालन स्वीकार करने का बड़ा अच्छा

प्रभाव पड़ा। मुहम्मद बिन क़ासिम और काका से प्रगाढ़ सम्बन्ध स्थापित हो गए। इस दोस्ती से इस्लामी सेना को आगे आने वाले युद्धों में बहुत मदद मिली। काका ने भी इस्लामी ताक़त से हर तरह के लाभ प्राप्त किए। उसके पास बड़ी दौलत एकत्र हो गयी और उसके दुश्मन उसके रास्ते से हट गए।

मुहम्मद बिन क़ासिम 93 हि0 में अशीहार के क़िले पर विजय प्राप्त करके सिन्धु नदी के पश्चिमी किनारे आया, तो सूरता के शासक मोका पुत्र बसाया ने बीस सरदारों के साथ उसके सामने हथियार डाल दिए। जब यह लोग उसके पास आए तो मोका को कुर्सी पर बैठाया, एक लाख दिरहम पुरस्कार के रूप में दिया, एक हरे रंग की छतरी भी प्रदान की जिसकी चोटी पर मोर बना हुआ था। बेट क्षेत्र का शासन भी उसके हवाले किया और एक सन्धि पत्र लिख कर दिया कि इस क्षेत्र की सत्ता उसके परिवार में पीढ़ी दर पीढ़ी जारी रहेगी। उसके सरदारों को भी शॉल और घोड़े दिए। इन उपकार के कारण मोका अरबों का बहुत वफ़ादार बन गया। उसने आगे के युद्धों में हर तरह से मदद पहुँचायी।

आवश्यक से अधिक उदारता पर हज्जाज बिन यूसुफ़ की चेतावनीः—

राजा दाहिर अपने अधीन सरदारों को इस तरह मुहम्मद बिन क़ासिम से मिलते देख कर बहुत परेशान हुआ। उसने अपने बेटे जयसिंह को अरबों को बढ़ने से रोकने के लिए बेट की ओर भेजा। उसने बढ़ कर अटक नदी के किनारे पर पड़ाव डाला। यहाँ 50 दिन तक दोनों सेनाएं एक दूसरे के निकट ही पड़ी रहीं मुहम्मद बिन क़ासिम की सेना में अकाल पड़ गया। घोड़े बड़ी संख्या में मरने लगे। राजा दाहिर खुश हुआ और व्यंग भरी बातें खिल कर उसको सन्धि के लिए सन्देश भेजा। यह मालूम करके हज्जाज ने अतिरिक्त घोड़े और सामन भेजे मुहम्मद बिन क़ासिम की आवश्यकता से अधिक उदारता से सन्देह में पड़ कर चेतावनी के रूप में यह लिखा कि तुम दुश्मनों को शरण देने में बड़े लालची हो गए हो, यह बात मुझे बहुत बुरी लगती है। जिस दुश्मन की दुश्मनी की परीक्षा हो चुकी हो उसको शरण देना उचित नहीं। नीच और सम्मानित को एक स्तर पर नहीं रखना चाहिए। बुद्धि से इस तरह काम करो कि दुश्मनों को तुम्हारी कमज़ोरी की कल्पना न हो। लम्बे समय से तुम दुश्मनों से युद्ध में लगे हुए हो, तुम समझौते की कोशिश करते हो, इस समझौता पसन्दी को लोग तुम्हारी कमज़ोरी समझेंगे। तुम अपनी राजनीति और शौर्य को बचा कर रखो अपनी समझ पर भरोसा करो। सही बात कहने वाले और मज़बूत दृष्टिकोण वाले बने रहो, लापरवाही को अपने पास न आने दो, दृढ़ निश्चय के साथ अल्लाह के आगे दिल और जान को समर्पित रखो।

मुहम्मद बिन क़ासिम के साथ ठाकुरों और जाटों का सहयोगः—

मोका बिन बसाया ने इस सिलसिले में सहायता के रूप में नौकाएं उपलब्ध कीं, भीम के ठाकुरों और पश्चिम के जाटों को लेकर उपस्थित हुआ और साकरा के सरदारों को वेट नामक द्वीप की ओर भेजा ताकि वह शत्रु की फ़ौज को आगे बढ़ने से रोकें।

शेष पृष्ठ...27...पर

अल्लाह के कलाम से हमारा तअल्लुक़

मौलाना ख़ालिद सैफुल्लाह रहमानी

इमाम अब्दुल्ला बिन मुबारक बहुत बड़े फक़ीह और मुहद्दिस हैं इमाम अबू हनीफा रह0 के शागिर्दों में हैं उन्होंने एक दिलचस्प वाकिया नक़ल किया है जिसको बहाउद्दीन (वफात 850) ने अपनी मशहूर किताब ''अल मुस्तरफ'' (जिल्द नं0 1 सफह 74–76) में ज़िक्र किया है।

वह एक बार हज के इरादे से मक्का तशरीफ ले गये थे वापसी में रास्ते में एक जगह कुछ नज़र आया क़रीब पहुंचे और देखा कि एक बूढ़ी औरत हैं जो छोटा कुर्ता और छोटा दुपट्टा पहनें हैं। इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने सलाम किया बुजुर्ग औरत ने सलाम का जवाब कुर्आन शरीफ के एक टुकड़े से दिया ''सलामती हो यह रब्बे रहीम की तरफ़ से इरशाद है''।

(सूरः यासीन–58)

इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने पूछा यह आप क्या कर रही हैं? वह कुर्आन की आयत में कहने लगीं ''जिसे अल्लाह रास्ता ना दिखाये उसे कोई रास्ता नहीं दिखा सकता।''

(सूरः आराफ–186)

यानी यह रास्ता भटक गई हैं, इमाम साहब ने पूछा कहाँ का इरादा है? वह कुर्आन की आयत में कहने लगीं ''पाक है वह (अल्लाह) जो अपने खास बन्दे को रात में मस्जिद हराम (काबा) से मस्जिद अक्सा ले गया''। (सूरः इस्रा–1) यानी यह हज कर चुकी हैं और बैतुलमक़दिस का इरादा है। इमाम साहब ने फिर पूछा कितने दिनों से यहाँ पड़ी हैं? औरत ने कुर्आन की आयत में जवाब दिया ''लगातार तीन रातों से''

(सूरः मरयम–10)

इमाम साहब ने पूछा आप के पास खाने का कुछ सामान है? औरत ने फिर कुर्आन की आयत में जवाब दिया ''मुझे अल्लाह खिलाता पिलाता है''।

(सूरः शुअरा–79)

इमाम साहब ने पूछा आप वजू कैसे करती हैं औरत ने फिर कुरआन की आयत में जवाब दिया ''अगर तुम्हें पानी न मिले तो तयम्मुम करो''।

(सूरः निसा–43)

यानी इस हुक्म पर अमल करती हूँ तयम्मुम करती हूँ इमाम साहब ने खाने की पेशकश की तो फिर कुरआन की आयत में जवाब दिया ''फिर रोज़े को रात तक पूरा करो''।

(सूरः बक़रह– 187)

यानी वह रोज़े से है इमाम साहब ने कहा यह तो रमज़ान का महीना नहीं है तो औरत ने फिर कुर्आन की आयत में जवाब दिया ''जो बतौर नफल मजीद अमल करे तो अल्लाह तआला कदर दानी करने वाला है और वाक़िफ है''।

(सूरः बकरा–158)

इमाम साहब ने कहा सफर में तो रोज़ा न रखने की वैसे भी इजाज़त है बुजुर्ग औरत ने फिर कुर्आन की आयत पढ़ी कि रोज़ा रख लेना बहरहाल बेहतर है। (सूरः बक़रा 184)

इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 के हैरत और

तअज्जुब में इज़ाफ़ा होता जा रहा था इमाम साहब ने पूछा कि जिस तरह मैं बात कर रहा हूँ आप भी उसी तरह बात क्यों नहीं कर रही हैं औरत ने फिर कुर्आन शरीफ की आयत मे जवाब दिया ''जब भी इन्सान कोई बात करता है तो निगराँ फरिश्ता उस पर मौजूद रहते हैं'' (सूरः क़ाफ–58) मतलब बात खूब एहतियात और तौल कर करनी चाहिए। इमाम साहब ने फिर पूछा आप का तअल्लुक़ किस क़बीले से है? बुजुर्ग औरत ने कुर्आन की आयत से जवाब दिया ''और जिस चीज़ का इल्म न हो उसके पीछे न पड़ो''। (सूरः इसरा–36) गोया इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक के इस सवाल पर बुजुर्ग औरत ने नाराजगी का इज़हार किया। इमाम साहब ने माज़रत की और कहा मुझे मॉफ कर दीजिए जवाब फिर कुर्आनी आयत में मिला ''आज तुम पर कोई गिरिफ़्त नहीं अल्लाह तुमको मॉफ करे दे''। (सूर यूसुफ–92)

इमाम साहब ने आगे बयान किया कि मैंने फिर पूछा कि क्या मैं आपको अपनी ऊँटनी पर सवार कर दूं ताकि आप अपने क़ाफिले से मिल सकें। फिर कुर्आनी आयत में कहने लगीं ''जो बेहतर काम करोगे अल्लाह उससे वाक़िफ़ है''। (सूरः बक़रा 197)

इमाम साहब ने अपनी ऊँटनी को बिठाया ताकि वह बुजुर्ग औरत सवार हो सके वह कहने लगीं (फिर कुर्आनी आयत पढ़ी) ''ईमान वालों से कह दो कि अपनी नज़रें नीची रखें''।

(सूरः नूर–30)

यानी इमाम साहब को नज़रें नीची करने का इशारा किया तो उन्होंने नज़रें नीची कर लीं और कहा सवार हो जायें सवार होने लगीं तो ऊँटनी बिदक गयी और उनका कपड़ा फट गया तो बुजुर्ग औरत ने फिर कुर्आन की आयत पढ़ी ''जो मुसीबत तुमको पहुँचती है वह तुम्हारी बद आमाली की वजह से होती है''।

(सूरः शूरा–30)

इमाम साहब ने फरमाया आप थोड़ा रुकें मैं पहले ऊँटनी को बाँध दूँ, बुजुर्ग औरत ने फिर कुर्आनी आयत पढ़ी। (सूरः अम्बिया–79) इमाम साहब फरमाते हैं मैंने ऊँटनी को बाँध दिया और उनसे कहा सवार हो जायें, जब सवार हुईं तो सवारी की दुआ पढ़ी जो कुर्आन शरीफ की आयत है।

(सूरः जुखरुफ़ 13–14)

इस तरह सफर शुरु हुआ, इमाम साहब ने ऊँटनी की लगाम थामी और ऊँटनी को तेज़ हाँकने के लिए कुछ बुलन्द आवाज़ निकालते हुए आगे बढ़े, बुजुर्ग औरत ने फिर कुरआन की आयत में कहा ''चलने में रफ़्तार दर्मियाना रखो और आवाज़ आहिस्ता रखो।''

(सूरः लुकमान–19)

इमाम साहब कहते हैं कि मैं धीमे धीमे चलने लगा फिर कुर्आन की आयत में हुक्म दिया ''जितना हो सके कुर्आन पढ़ें''।

(सूरः मुजम्मिल–20)

मैंने कहा कि आपको बड़ा खैर अता किया गया है वह कहने लगीं (फिर कुर्आन की आयत में) ''अक़्ल वाले ही नसीहत हासिल करते हैं''।

(सूरः बक़रा–269)

इमाम साहब ने कुछ आगे बढ़ने के बाद पूछा क्या आपके शौहर हैं? बुजुर्ग औरत ने

कुर्आन की आयत में जवाब दिया ''ऐ ईमान वालो! ऐसी चीज़ों के बारे में सवाल न करो जो तुम पर ज़ाहिर कर दी जायें तो तुम्हें बुरा लगे''।

(सूरः मायदा–101)

अपने बेवह होने की तरफ़ इशारा किया इमाम साहब ने काफिले तक पहुँचने तक कोई बात नहीं की पहुँचने के बाद पूछा यहाँ आप के कौन लोग हैं? (कुर्आन की आयत पढ़ कर जवाब दिया) ''माल और औलाद दुन्या की ज़िन्दगी की ज़ीनत है''।

(सूरः कहफ–46)

इशारा था कि उनके बच्चे और सामान क़ाफिले में हैं। मैंने पूछा हज में उनके बच्चे क्या कर रहे थे कहने लगीं (फिर कुर्आन की आयत में) ''रास्तों की निशानियों और रात में सितारों से वह राह दिखाते हैं''।

(सूरः नहल–16)

मतलब उनके बच्चे हाजियों के क़ाफिले में रास्ता बताने और मन्ज़िल की रहनुमाई का काम करते थे। इमाम साहब सवारी खेमों तक लाये और पूछा यह खेमे हैं आपके तअल्लुक़ वाले कौन हैं? औरत ने कुर्आन की आयत में कहा ''अल्लाह तआला ने इब्राहीम अलै0 को खलील बनाया है''।

(सूरः निसा–125)

''अल्लाह तआला ने मूसा अलै0 से बात फरमाई'' (सूरः निसा–164) ''ऐ यहया किताब को मजबूती से पकड़ो''।

(सूरः मरयम–12)

मतलब इब्राहीम, मूसा और यहया मेरे बच्चों के नाम हैं, इमाम साहब ने इन्हीं नामों से आवाज़ लगाई और तीन नवजवान चाँद की तरह रौशन दौड़े चले आये और जब बैठने लगे तो माँ ने कुर्आन की आयत पढ़ी ''अपने में से किसी को यह पैसे ले कर शहर भेजो कि वह देखे कि कौन पाक साफ खाना बेचने वाला है फिर वह तुम लोगों के पास खाने की चीज़ ले कर आये'' (सूरः कहफ–19) तो उनका एक बेटा बाज़ार गया, खाने की कुछ चीज़ खरीद कर लाया और मेरे सामने रख दिया वह कहने लगीं (कुर्आन की आयत में) ख़ुशगवारी के साथ खाओ पियो उस अमल के बदले जो तुमने पिछले दिनों में किये हैं इमाम साहब ने औरत के बेटों से कहा जब तक तुम इनके बारे में मुझे न बताओगे मैं खाना नहीं खा सकता।

बेटों ने कहा यह हमारी माँ हैं चालीस साल की मुद्दत से उन्होंने कुर्आन के अलावा कोई और कलाम अपनी ज़बान से नहीं निकाला कि कहीं अपनी तरफ़ से बोलने में कुछ ज़ियादती न हो जाये और अल्लाह नाराज़ हो जाये, इमाम साहब कहते हैं कि मैंने कहा ''यह अल्लाह का फज़्ल है, जिसे चाहे अता फरमाये और अल्लाह यक़ीनन बड़े फज़्ल वाले हैं''। (सूरः जुमा–4)

यह वाकिया निशाने इबरत और नसीहत है कि आम औरत को भी कुर्आन से कैसा तअल्लुक़ होता था, और कुर्आन शरीफ की तिलावत और उसकी समझ का कैसा आला दर्जे का ज़ौक़ हासिल होता था काश हम यह और इस तरह के इबरत वाले वाकिआत को अपने लिए आईना बना लें और उस आईने में अपनी तस्वीर देखें कि कुर्आन करीम से हमारा क्या तअल्लुक़ है।

❖❖❖

मुआ़मलात और अख़लाक़ को ठीक करने की ज़रूरत

मौ0 सै0 जाफर मसऊद हसनी नदवी

सहाब–ए–किराम रज़ि0 शरीअ़त के पीछे चलते थे, हम नारों के पीछे चलते हैं, उन्होंने सर झुकाया फिर कटाया, हम शरीअ़त के नाम पर सर कटाने की बात तो करते हैं लेकिन शरीअ़त के लिए सर झुकाने को तैयार नहीं होते, हम हंगामा पसंद, जल्से, जुलूस पसंद, धरने व नारे बाज़ी पसंद, लेकिन अम्न व शांति के साथ संविधान और क़ानून के दायरे में आपसी सुलह समझौते के रास्ते से उन मसायल को हल करना शायद हम अपने लिए शर्मिन्दगी और मान सम्मान में कमी समझते हैं।

इबादत के मुआमले में यक़ीनन हमारे अन्दर बड़ी तबदीली आई है सब को इसका ऐतिराफ है और खुशी भी, नमाज़ियों की संख्या बराबर बढ़ रही है, ज़कात निकालने का चलन बढ़ रहा है, लेकिन ग़ौर करने की बात यह है कि हाजियों , नमाज़ियों, रोज़ेदारों और ज़कात देने वालों की संख्या बढ़ने के बावजूद हमारे समाज पर इन इबादतों के वह असरात ज़ाहिर नहीं हो रहे हैं जो होने चाहिए, चुनांचे हमें अपनी नीयतों को टटोलना चाहिए और उन पैसों का भी जायज़ा लेना चाहिए जो हम इस रास्ते में खर्च करते हैं, हज़रत मौलाना अली मियाँ रह0 ने एक मौक़े पर फरमाया था ''दिल के मुसलमान होने के साथ सोच और फिक्र को भी मुसलमान होना चाहिए।

एक पहलू और जो हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यही वह पहलू है जो दूसरों के सामने आता है और जिससे दूसरों को भी वास्ता पड़ता है और यही उनको हम से क़रीब भी करता है और यही पहलू उनको हमसे दूर भी करता है, और यह पहलू है मुआ़मलात और अख़लाक़ का, हमें अपने मुआ़मलात और अख़लाक़ को खास तौर पर दुरुस्त करने की ज़रूरत है, हम इबादत तो शरीअ़त के मुताबिक अंजाम देने की कोशिश करते हैं लेकिन मुआ़मलात में हम अपनी मर्ज़ी, रवाज़, अपना फायदा, अपने हित और ज़रूरत को बुन्याद बनाते हैं।

यही हमारा पैग़ाम और यही हमारी दावत है कि एकता पैदा करें, भावनाओं पर क़ाबू रखें, इबादात करते समय नीयतें दुरुस्त रखें, मुआ़मलात को दीन व शरीअ़त के अधीन रखें, अपने अखलाक़ व व्यवहार को नबी सल्ल0 के अखलाक़ व व्यवहार के सांचे में ढ़ालने की कोशिश करें, यही हमारा सबसे प्रभावी हथियार और यही हमारी सबसे मज़बूत ढ़ाल है।

❖❖❖

रमज़ान के बाद करने के काम

जमाल अहमद नदवी
(उप सम्पादक)

किसी भी मकसद और किसी भी क्षेत्र में कामयाबी के लिए निरंतर प्रयास ज़रूरी होते हैं वही लोग और वही समूह कामयाब होते हैं जो बराबर प्रयासरत रहते हैं और वह अपने अपने कार्यों के नफे नुक़सान का आकलन करते रहते हैं, अभी नेकियों का सीजन रमज़ान हम से जुदा हुआ है जिसका एक एक पल बड़ा कीमती था जिसके आते ही हर ओर खुशियों का माहौल बन गया था हर ओर रहमत और बरकत की रिमझिम बारिश हो रही थी, इस महीने को अल्लाह ने अपना महीना कह कर इसके इज़्ज़त व वक़ार को और बढ़ा दिया।

नेकियों के इस सीजन से हर एक मुसलमान ने जिसको अच्छे और भले काम करने की जितनी तैफीक मिली खूब फायदा उठाया हर एक ने एक माह के रोज़े उनके आदाब व शर्तों के साथ पूरे किये, नमाज़ों का खूब खूब एहतिमाम किया, हर नमाज़ जमात से अदा करने की पूरी कोशिश की सुबह से शाम तक की दुआओं और जिक्र व तस्वीह की पूरी पाबन्दी की, तहज्जुद से लेकर तरावीह तक में और दूसरे खाली समय में कुरआन पढ़ने पढ़ाने सुनने सुनाने पर खास ज़ोर दिया क्योंकि उसके जेहन में यह बात रची बसी थी कि कुर्आन को इस महीने से खास मुनासबत है कि रमज़ान ही में कुर्आन उतारा गया, तौबा व इस्तिग़फ़ार में भी अपने को लगाया और खपाया, सुस्ती व काहिली को अपने पास फटकने का बिल्कुल मौक़ा न दिया, और हर काम को पूरे ध्यान, लगन निष्ठा व ईमानदारी और सवाब की उम्मीद के साथ किया, रात की नींद और दिन के सुकून व इत्मिनान को अल्लाह व रसूल की खुशी हासिल करने के लिए त्याग दिया और शरीअत के आगे उसने अपने अन्तरात्मा दिल दिमाग और अंग अंग को समर्पित कर दिया, गरीबों मिस्कीनों विधवाओं और परेशान हाल लोगों की दिल खोल कर यह समझते हुए हर मुम्किन सहायता की, कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने इसको हमदर्दी का महीना कहा है तात्पर्य हर एक ने एक ओर भलाईयों के लिए निरंतर प्रयास किया तो दूसरी ओर बुराईयों, लड़ाई झगड़े, गाली गलौज, झूठ गीबत, नशा, ताश, जुआ, और मोबाइल के बेजा इस्तेमाल से अपने को दूर रख कर अल्लाह की रिज़ा व खुशनूदी हासिल करने का कोई मौक़ा हाथ से जाने न दिया क्योंकि उसके सामने अल्लाह के रसूल सल्ल0 का वह फरमान था कि जिसने खाना पीना छोड़ा लेकिन झूठ बोलना और उसपर अमल करना न छोड़ा तो अल्लाह को उसके इस अमल की कोई ज़रूरत नहीं।

यह समस्त प्रयास रोजे के उस वास्तविक उद्देश्य को हासिल करने के लिए किये गये जिसे कुरआन मजीद में ''तक़्वा'' कहा गया है इसको हासिल करना कठिन ज़रूर है लेकिन मुश्किल और नामुम्किन नहीं, बिना रुके निरंतर किया जाने वाला प्रयास हमेशा आसानी और कामयाबी के रास्ते खोलता है क्योंकि अल्लाह तआला का फरमान है कि हर तंगी और परेशानी के बाद आसानी है, रोज़े की समाप्ति पर खुशी व उल्लास के लिए ईद

का दिन उसी का प्रतीक है ताकि हम अपने मालिक का शुक्र अदा करें लेकिन खुशी के इस अवसर की भी सीमायें हैं हमने उनका भी पालन करके अल्लाह और उसके रसूल को राज़ी किया।

आइये! ज़रा ध्यान पूर्वक सोचें कि क्या रमज़ान गया तो हम बिल्कुल आज़ाद हो गये, हम जिस तरह चाहें ज़िन्दगी गुज़ारें, अब शरीअत की पाबंदियों और सामाजिक एवं नैतिक हर प्रकार की पाबंदियों से मुक्ति पा गये और हर चीज़ को अगले सीजन पर टाल दिया कि अगला सीजन आयेगा तो देखा जायेगा। क्या वक़्ती और काम चलाऊ मेहनत से कोई अपने कार्यक्षेत्र में कामयाब हो सकता है? हरगिर्ज नहीं, निरंतर लगन और मेहनत के साथ प्रयास ही कामयाबी के अवसर प्रदान करते हैं, आखिरत (प्रलोक) की ज़िन्दगी में कामयाबी के लिए साल के ग्यारह महीने भी प्रयासरत रहना पड़ेगा और हमें उस ऊर्जा से काम लेना होगा जो हमने रमज़ान में हासिल की। फर्ज़ नमाज़ों के साथ सुन्नत व नफ़्ल नमाज़ों का भी हमेशा साल भर एहतिमाम करें, क्योंकि नमाज़ आप सल्ल0 के आँखों की ठंढक है, रमज़ान के रोज़ों के अलावा नफ़्ल रोज़े भी रखने की कोशिश करें, जिक्र, तस्वीह तौबा व स्तिग़फार को अपनी ज़िन्दगी का लाज़मी काम बनायें, अल्लाह के रसूल के फरमान के मुताबिक अल्लाह को वह काम बहुत पसंद है जिसको पाबंदी के साथ लगातार किया जाय चाहे थोड़ा ही क्यों न हो, अल्लाह की रहमत तो अपने बन्दों को देने का बहाना ढूँढती है इसलिए ईद के बाद शव्वाल के महीने में 6 रोज़े रखने की ताक़ीद फरमाई है, चूंकि अल्लाह रमज़ान में हर नेकी का बदला दस गुना अता फरमाता है तो 30 दिन के रोज़े का सवाब 10 माह के बराबर हुए और 6 दिन का सवाब 60 दिन के बराबर हुआ, इसलिए फरमाया कि जिसने शव्वाल के भी 6 रोज़े रखे तो गोया उसने साल भर रोज़ा रखा यह है दाता के देने का अंदाज़, अब जो चाहे उन रोज़ों को एक साथ रखे या अलग अलग, इसका पूरा इख़्तियार है। उलमा ने इन रोज़ों का एक और मकसद बताया है कि अल्लाह आखिरत में फर्ज आमाल की कमियों को नफ़्ल से पूरा फरमायेंगे, शव्वाल के 6 रोज़े भी अल्लाह ने अपने बन्दों पर रमज़ान की कमियों की भरपाई के लिए अता फरमाये हैं।

अल्लाह उम्मत के हर व्यक्ति को अंतिम साँस तक निरंतर कामयाबी के लिए नेकियों पर जमने और बुराईयों से दूर रह कर, शिक्षा, समाज सुधार और देश व प्रदेश की उन्नति, शांति, सद्भाव के समस्त प्रयासों में अपने खुदा को राज़ी व खुश करने के लिए शामिल होने की तौफ़ीक से नवाजे। आमीन। ◆◇◆

''सच्चा राही'' के पाठकों के लिए खुशख़बरी

कई साल पहले ''सच्चा राही'' में अन्तर्राष्ट्रीय समाचार'' के अन्तर्गत डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी मरहूम के क़लम से यह कालम होता था, जिस का सिलसिला उनके इन्तिक़ाल के बाद रुक गया था, पाठकों की माँग पर यह रोचक कालम दुबारा शुरु किया जा रहा है। (इदारा)

अच्छी आदतें और शुक्र

नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

हज़रत इब्राहीम अदहम एक अल्लाह वाले गुज़रे हैं। इस्लामी पुस्तकों में उनको अधिकता से याद किया गया है। उनकी नसीहतें और हिदायतें लोगों की ज़िन्दगी बदल देती थीं।

एक बार उनसे किसी ने पूछा, हज़रत! आपकी बातें और काम बहुत अच्छे हैं? उन्होंने जवाब दिया, अल्लाह का शुक्र है।

मेरे उस्ताद हज़रत मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0 कहा करते थे कि यदि किसी को कहा जाए कि आप बहुत नेक और भले आदमी हैं तो वह शेखी बघारते हुए कहने लगता है कि अरे हम कहाँ? हम तो बेकार और बुरे लोग हैं। मगर इन्हीं को जब नालायक बोल दिया जाए तो नाराज़ हो जाते हैं।

होना भी चाहिए कि जब आदमी की प्रसंशा की जाए तो वह अल्लाह का शुक्र अदा करे। क्योंकि अल्लाह उसके ऐबों को छुपा कर दूसरों के सामने उसके इज़्ज़त की हिफाज़त कर रहा है। अगर सामने वाला मज़ा लेने के लिए भी झूठी तारीफ कर रहा है तब भी मन में रब से दुआ करे कि हमें अच्छा और सच्चा बना दे ताकि इसका मज़ाक हक़ीक़त बन जाए।

बहुतेरे लोगों की आदत होती है कि किसी की अच्छाई मालूम हुई तो छुपा ले गये और बुराई मालूम हुई तो कुरेद–कुरेद कर जानकारी ली और लोगों में फैला दिया। बुरी बात तो यह भी है कि जिसकी बुराई मालूम हुई तो उसे अकेले में नहीं समझाते बल्कि पूरे गली कूचे में उसकी कमियों का ढ़िंढ़ोरा पीट डालते हैं। इसका उदाहरण इस प्रकार से भी दिया जा सकता है कि कोई आदमी बीमार हो कर डॉक्टर के पास अपनी बीमारी समझने जाए मगर डॉक्टर उसकी बीमारी उसे न बता कर पूरे मुहल्ले को बताता फिरे कि फलाने को ये बीमारी है। ऐसा ही हाल समाज के कुछ लोगों का हो गया है जो दूसरों के ऐब को बताते फिरते हैं।

इस्लाम में इसका इशारा है कि दूसरों की कमियों को छुपाओ ताकि कल क़यामत में अल्लाह तुम्हारी कमियों को छुपाए। आदमी में ये भी बुराई होती है कि जब उसे दूसरों की कमियाँ मालूम हो जाती है तो उस पर शेर हो जाता है और उस पर रहम नहीं करता, लेकिन जब उसकी कमियों के राजफाश होते हैं तो लोगों से रहम की भीख पाने का अभिलाषी बन जाता है।

ख़ैर! बात इब्राहीम अदहम की हो रही थी कि पूछने वाले ने उनसे पूछा कि ये जो आप अच्छी–भली और अक़्लमन्दी की बातें करते हैं, ये कैसे संभव हो पाता है?

हज़रत इब्राहीम रह0 ने कहा मैंने तीन आदतें डाल ली हैं, पहली ये कि मैं कम खाता हूँ दूसरी ये कि मैं कम सोता हूँ और तीसरी ये कि मैं कम बोलता हूँ।

ये तीनों आदतें इब्राहीम अदहम रह0 ने हज़रत मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी में डाली थीं, आप सल्ल0 के जीवन की दिनचर्या देखी जाए तो ये तीनों आदतें उनकी ज़िन्दगी में महत्वपूर्ण स्थान रखती थीं।

आज के साइंसी दौर में भी ये बात आई है कि बहुत अधिक खाने और बहुत ज़ियादा सोने से सेहत खराब होती है। सोने के मामले में विशेष रूप से युवा वर्ग बिगाड़ का शिकार हो चला है। जो रात सोने के लिए बनाई गई थी अधिकतर युवा उसमें जाग कर और दिन में सो कर अपनी सेहत बिगाड़ रहे हैं। मैं तो सरकार से कहूँगा कि वह ऐसी नीति बनाये कि देशवासी जल्द सो कर सुबह जल्दी उठें ताकि देश स्वस्थ रहे।

तीसरी आदत कम बोलने की हज़रत मुहम्मद सल्ल0 कम बोलते और कम शब्दों में ज़ियादा बातें समझा देते। गैर ज़रूरी बातों से सदेव परहेज़ करते। ये भी समाज में देखा गया है कि ज़ियादा बोलने से लोग उसको अहमियत नहीं देते और वह हल्का मान लिया जाता है।

❖❖❖

भारत के अतीत .....

राजा दाहिर की एक फ़ौज से मुहम्मद बिन क़ासिम की सेना की मुठभेड़ रजपुर के स्थान पर हुई। मोका का भाई रासल दाहिर की सेना के साथ था, क्योंकि दाहिर ने बेट का क्षेत्र उसके हवाले कर देने का वादा किया था। दाहिर की सेना पराजित हुई तो रासल मुहम्मद बिन क़ासिम से आ कर मिल गया। जब वह उसके पास आया तो इस्लामी सेना के सेनापति ने कहा कि, तुम आ गए हो तो मिल कर रहो। तुम्हारे साथ हर तरह के उपकार किए जायेंगे जो क्षेत्र तुम माँगोगे तुम को दिया जाएगा। रासल ने उत्तर दिया कि आपने एहसान किया है तो आपका आज्ञापालन लगातार करता रहूँगा। रासल और मोका ने मिलकर मुहम्मद बिन क़ासिम को आगे बढ़ने और स्थानीय झील और नदी पार करने का रास्ता दिखाया और दोनों ने इस्लामी सेना का अधिकार जयपुर नामक एक गाँव पर करा दिया जो सैनिक रणनीति के अनुसार महत्वपूर्ण स्थान था। राजा दाहिर को सूचना मिली तो इस बार स्वयं सेना लेकर बढ़ा और एक रमज़ान 93 हिजरी में दोनों के बीच लड़ाई शुरु हो गयी। कई दिनों तक लड़ाई जारी रही। इस बीच कुछ ब्राह्मण मुहम्मद बिन क़ासिम के पास आये, शरण का अनुरोध किया फिर उन्होंने सूचना दी कि राजा दाहिर की सेना पीछे से असुरक्षित है, इस सूचना पर मुहम्मद बिन क़ासिम के सरदारों ने उन ब्राह्मणों के साथ मिल कर जबरदस्त हमला किया जिससे शत्रु में अफ़रातफ़री फैली। पाँच दिनों तक युद्ध चलता रहा। अन्तिम दिन राजा दाहिर मारा गया। फिर राजा दाहिर के बेटे जयसिंह और उसकी एक दूसरी बीबी रानीबाई ने रावर के क़िले में क़ैद हो कर मुहम्मद बिन कासिम का मुकाबला किया लेकिन रावर पर भी विजय प्राप्त कर ली गयी। रानी तो सती हो गयी और जयसिंह ब्राह्मणाबाद चला गया। मुहम्मद बिन क़ासिम ब्राहह्मणाबाद की तरफ़ बढ़ा तो रास्ते में बहरूर और देहलीला के क़िलों को पराजित कर लिया।

.....जारी.....

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

–मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः आज कल लोगों में बिना ज़रूरत क़र्ज लेने का काफ़ी रिवाज़ हो गया है, क्या बिना मजबूरी के कर्ज लेना जायज़ है?

उत्तरः नबी करीम सल्ल0 की हदीसों से यह बात मालूम होती है कि कर्जदार बनना कोई अच्छा अमल नहीं है और जब कोई वास्तविक ज़रूरत सामने न हो कोशिश भर बचना चाहिए, अल्लाह के नबी करीम सल्ल0 कर्जदार बनने से अल्लाह की पनाह माँगा करते थे।

(बुखारी–2397)

प्रश्नः कर्ज लेने के बाद उसकी अदायगी की फिक्र न करना या अदा करने की पोज़ीशन होने के बावजूद टाल मटोल से काम लेना शरीअ़त के एतिबार से कैसा है??

उत्तरः ज़रूरत के समय अदायगी की नीयत से क़र्ज लेना जायज़ है, लेकिन कर्ज ले कर उससे ग़ाफिल हो जाना और अदायगी की नीयत न करना जायज़ नहीं, एक हदीस में है कि मालदार आदमी का कर्ज की अदायगी में टाल मटोल करना जुल्म है।

(तिर्मिज़ी)

प्रश्नः कर्ज की आदायगी के समय कर्ज से ज़ियादा देना जायज़ है या नहीं? जबकि पहले से ज़ियादा देने की शर्त न हो, संयोग से कर्ज अदा करते समय कुछ ज़ियादा दे दिया जाये?

उत्तरः कर्ज अदा करते समय कुछ बढ़ा कर दे दिया जाये जब कि बढ़ा कर देने की शर्त न हो, और न उसका रिवाज हो, कि बढ़ा कर लेने की उम्मीद की जाती हो, तो ऐसी सूरत में कर्ज से ज़ियादा देना दुरुस्त है।

(तिर्मिजी– 1/240)

प्रश्नः एक आदमी पर कर्ज है वह हज करना चाहता है, सवाल यह है कि वह पहले हज करले या क़र्ज अदा कर ले, कर्ज अदा करने का इरादा है लेकिन अदा न करके वह हज पर चला जाय, तो क्या उसका हज हो जायेगा?

उत्तरः बेहतर तो यही है कि पहले कर्ज अदा कर ले, उसके बाद हज अदा करे, लेकिन अगर कोई क़र्ज अदा किये बिना हज के सफर पर रवाना हो जाये और हज अदा करे तो हज अदा हो जायेगा और उससे हज की फरजियत उतर जायेगी, लेकिन याद रहे ऐसा करना ना पसंदीदा है, फतावा क़ाज़ी खाँ में यह तफसील मौजूद है कि जिसके पास इतना माल हो कि वह कर्ज अदा कर सके तो पहले कर्ज अदा करे, हज न करे, अगर हज पर चला जाय और उस पर कर्ज बाक़ी रहे तो यह मकरूह है।

(फतावा काजी खाँ–1/313)

प्रश्नः एक आदमी के पास इतना माल नहीं है कि वह हज कर सके लेकिन तमन्ना और शौक बहुत ज़ियादा है, उसके लिए वह कर्ज लेने के लिए तैयार है ताकि वह हज कर सके, सवाल यह है कि हज फर्ज न हो, उसके बावजूद कर्ज ले कर हज पर जाने से हज अदा हो जायेगा?

उत्तरः जब हज की पोजीशन न हो तो क़र्ज ले कर हज पर जाना अकलमन्दी नहीं है, कर्ज

से बचने की हर मुम्किन कोशिश करनी चाहिए और पोजीशन ठीक होने की दुआ करते रहना चाहिए, लेकिन अगर कोई कर्ज ले कर हज कर ले तो हज अदा हो जायेगा।

(गुनयतुन नासिकः 33)

प्रश्नः एक आदमी ने अपनी बीवी का महर अदा नहीं किया है लेकिन वह हज का इरादा रखता है और हाल यह है कि अगर महर अदा करेगा तो हज नहीं कर सकेगा और अगर हज अदा करेगा तो महर अदा नहीं कर पायेगा, ऐसी सूरत में कौन सा काम करे?

उत्तरः ऐसे आदमी को चाहिए कि वह महर अदा करे फिर गुन्जाइश हो तो हज भी करे, वरना आगे उसकी तैयारी करे, लेकिन अगर बीवी से महर अदा करने की कुछ मोहलत ले ले तो इसकी गुंजाइश है और हज अदा करने के बाद महर अदा करने की कोशिश करे।

(गुन्यतुन नासिकः 20)

प्रश्नः प्रोविडेण्ड फण्ड *(PF)* का पैसा जब रिटायर्मेन्ट के बाद मिल जाये तो क्या ज़कात उस पर तुरन्त वाजिब हो जाती है या उस पैसे पर साल गुज़रना ज़रूरी है?

उत्तरः जो शख्स साहिबे निसाब हो यानी उस पर ज़कात निकालना फर्ज हो, और बीच साल में पी0एफ0 की रक़म मिली तो अब पैसे पर साल गुज़रना ज़रूरी नहीं है बल्कि पहले की रक़म में अटैच हो जायेगी, और उस पर भी ज़कात वाजिब हो जायेगी। अल्लामा हसकफी रह0 ने लिखा है कि ''जो रक़म बीच साल में आ जाये'' वो भी ज़कात के माल में शामिल मानी जायेगी और उस पर ज़कात वाजिब होगी।

(अद्दुर्रुल मुखतार– 3/214)

प्रश्नः जिन लोगों ने रमज़ान में सदक़–ए–फित्र अदा नहीं किया और ईद के दिन भी अदा नहीं कर सके तो क्या वह बाद में अदा कर सकते हैं या उनके ज़िम्मे से समाप्त हो जायेगा?

उत्तरः सदक़–ए–फित्र रमजान और उसके बाद भी अदा किया जा सकता है, ईद का दिन गुज़रने की वजह से वाजिब समाप्त नहीं होता, बल्कि जितनी जल्दी मुम्किन हो सके ईद के बाद भी अदा कर दे।

प्रश्नः एक व्यक्ति ने नज़र मानी थी कि मेरा बच्चा अगर बीमारी से सेहतयाब हो गया तो मैं एक कुंतल गेहूँ सद्क़ा करूँगा, अब वह बच्चा माशाअल्लाह ठीक हो गया अब वह चाहता है कि गेहूँ के बजाय रूपया सद्क़ा कर दे तो इसकी इजाज़त होगी?

उत्तरः गेहूँ या उसकी क़ीमत दोनों कोई भी सद्का कर दें तो नज़र अदा हो जायेगी, फतावा क़ाज़ी खाँ में इस क़िस्म के जायज होने की वज़ाहत मौजूद है। (फतावा काज़ी खाँ 1/169)

प्रश्नः अगर कोई अपने लड़के पर गुस्सा हो कर कहे कि तेरी कमाई मेरे लिए हराम है और अब अगर वह शख्स अपने बेटे की कमाई खाना चाहे तो क्या सूरत होगी? और बेटा बाप के मरने के बाद उसके कफन दफन में शरीक़ हो तो क्या इसकी इजाज़त होगी?

उत्तरः अगर कोई व्यक्ति किसी हलाल चीज़ को अपने ऊपर हराम कर ले तो उसके हराम करने से वह चीज़ हराम नहीं होगी बल्कि उसका इस्तेमाल उसी तरह जायज़ और हलाल रहेगा, हाँ क़सम खा कर तोड़ने पर कफ़्फ़ारा देना ज़रूरी होगा, इसलिए बाप बेटे की कमाई खाये और कफ़्फ़ारा अदा करे और बेटा कफन दफन में शामिल हो, इस्लामी विधान में इसकी इजाज़त ही नहीं बल्कि इस पर ज़ोर भी दिया गया है।

(शरह तनवीर 3/63)

❖❖❖

–पिछले अंक से आगे.....

घरेलू मसायल

–मौलाना बुरहानुद्दीन सम्भली रह0

–अनुवादः मौ0 मु0 जुबैर अहमद नदवी

बहुविवाह की बुराई करने वाला दिमाग़ः–

इन दोनों तरीक़ों की तुलना सद्बुद्धि और विवेक की रौशनी में की जाए तो साफ़ मालूम हो जाए कि कौन सा तरीका शरीफ़ों वाला है और कौन सा जानवरों वाला किसे बदलने की ज़रुरत है और किसे बाकी रखने और प्रचलित करने की?

इन सारी बातों के साथ साथ इस बात की संभावना से इंकार नहीं कि बहुविवाह के कुछ नुक़सानात्मक पहलू भी अमल करते वक़्त सामने आएं, मगर ये सच्चाई भी सामने रहनी चाहिए कि दुनिया के हर क़ानून बल्कि हर व्यवहारिक नियम की तरह शरीयत में भी (अपनाने के लिए) ज़ियादा अच्छाई और (बचने के लिए) ज़ियादा बुराई को देखा जाता है जैसा की इमाम शातिबी रह० ने फरमायाः–

किसी काम के फ़ायदामंद और नुकसानदेह पक्षों के होने पर अगर आमतौर पर (अक्सर हालात में) फायदामंद पक्ष ज़ियादा हो तो शरीयत के एतिबार से वो काम पसंदीदा हो जाता है और उसके हासिल करने का बन्दों को हुक्म दिया जाता है इसके विपरीत अगर किसी काम में नुकसानदेह पक्ष फायदामंद पक्षों पर स्वभाविक रूप से अक्सर ज़ियादा होता हो तो उसको हटाना और दूर करना ही शरीयत में पसंद किया जायेगा।

इस समीक्षा को पेश करने का मतलब ये नहीं है कि किसी क़ानून के नुकसानदेह पक्ष सामने आ जाने के बाद भी नज़रअंदाज कर दिया जाए और उसको ठीक ना किया जाए, नहीं! ज़रूर ठीक करना चाहिए उसके लिए शरीयत के क़ानून में ही सुधार की विभिन्न सूरतें और उस नुक़सान को ख़त्म करने के लिए बहुत से रास्ते मौजूद हैं (जैसा कि शुरू में जिक्र हुआ) पति के इंसाफ ना करने की सही शिकायत पर औरत को काजी के जरिये निकाह फस्ख करने (तोड़ने) का अधिकार दिया गया है। इसके अलावा पहले से सुरक्षा के तौर पर दूसरी शादी से पहले ही कुछ ऐसे उपाय किये जा सकते हैं जिनसे जुल्म की संभावना कम से कम रह जाए।

यद्यपि चंद बीवियां रखने वाले पतियों के जुल्म की दास्तानों और उसका प्रोपेगंडा करने वालों ने आसमान सर पर उठा रखा है लेकिन शोध करने और हालात की विस्तृत समीक्षा करने और घटनाओं का सर्वे करने के बाद इस अतिष्योक्ति की हक़ीक़त खुल कर सामने आ जाती है सबसे पहली बात तो ये कि मुसलमानों खासतौर से हिंदुस्तानी मुसलमानों में बहुविवाह का रिवाज ना होने के बराबर है जिस का सबूत पिछले दिनों अख़बारों में प्रकाशित होने वाले एक सर्वे रिपोर्ट है जिसमें कहा गया है कि मुसलमानों में दूसरी शादी का रिवाज प्रति हज़ार नौ के औसत से है। कुल संख्या हिन्दुओं से भी बहुत कम, ज़ाहिर है कि इसमें सौ फीसद

घटनाएं जुल्म करने और इंसाफ़ ना करने की नहीं हो सकतीं। मान लीजिये चंद बीवियां रखने वाले पतियों की आधी संख्या जुल्म करती है (जबकि परिस्थिति इतनी भयानक नहीं है) तो इसका मतलब यह हुआ कि एक हज़ार शादी शुदा मर्दों में सिर्फ चार या पांच घटनाएं जुल्म करने की हुईं यानी आधे फीसद से भी कम। यहाँ ये बता देना बेजा न होगा कि बहुविवाह के औचित्य की यूं तो घोर आलोचना की जा रही है लेकिन व्यवहारिक रूप से सबने इसके औचित्य ही नहीं फायदेमन्द होने को मान लिया है बल्कि इसका प्राकृतिक होना मान लिया है सबूत के लिए वो आँकड़े काफी हैं जो दुनिया भर के लोगों का जायजा ले कर दिन प्रति दिन सामने आते रहते हैं। यूरोप व अमरीका का तो जिक्र ही छोड़िये यहाँ हिंदुस्तान में जो एक धार्मिक देश कहलाता है और जहाँ धार्मिक आदेशों पर अमल करने वालों की संख्या दूसरे बहुत से देशों से ज़ियादा है। वहां 1961 की जनगणना की समीक्षा के अनुसार गैर मुस्लिम कबीलों में एक से ज़ियादा बीवियां रखने वालों का अनुपात 15.25%, बौद्धों में 7.97%, जैनियों में 6. 72%, हिन्दुओं में 5.8%, था। जबकि मुसलमानों में सिर्फ 5.7%, यानी सबसे कम था और उसके बाद 1981 के सर्वे के अनुसार भी मुसलमानों में एक ही समय में एक से ज़ियादा बीवी रखने का अनुपात सिर्फ 4.3%, और हिन्दुओं में 5.6%, था। सबसे ज़ियादा रोचक बात यह है कि तमिलनाडु के मशहूर पूर्व मुख्यमंत्री रामचंद्रन की कई बीवियां थीं जिनमें दो सगी बहनें थीं। इसके अलावा हिन्दू धर्म की विश्वसनीय ग्रंथों में तो ना सिर्फ मर्दों बल्कि शादी शुदा औरतों को भी असली पति की मौजूदगी में कई दूसरे मर्दों से ''नियोग'' का अधिकार दिया गया है (जिसका विवरण पहले गुज़र चुका है)।

गौर फरमाइये कि ऐसे मसले पर सिर खपाना और उसके इस तरह पीछे पड़ना कि दुनिया के दूसरे ज़रूरी मसले पीठ पीछे डाल दिये जाएं, क्या अक़्लमंदी और समझदारी की बात होगी। इस अवसर पर ''खोदा पहाड़ निकला चूहा'' की कहावत सही नज़र आती है।

संभावित जुल्म की रोकथाम का तरीक़ाः—

फिर भी जुर्म का ग्राफ कितना ही कम क्यों ना हो बहरहाल उसकी रोकथाम के लिए कोशिश ज़रूर करनी चाहिये। यहाँ इस बारे में संक्षेप में कुछ उपाय सुझव के रूप में ज़िक्र किये जाते हैं। जिनसे चंद बीवियाँ रखने वालों को जुल्म से रोकने में मदद मिलेगी।

शरीफ लोगों में दूसरी शादी करने की जुरअत आमतौर पर वही करते या कर सकते हैं जो दूसरी योग्यताओं के साथ खुशहाल और हैसियत वाले हों इस हक़ीक़त को सामने रख कर दूसरी औरत से निकाह कर लेने की संभावना को मद्दे नज़र रखते हुए निम्नलिखित सावधानियाँ अपना सकते हैं।

1. निकाह करते समय खुद बीवी या उसके अभिभावकों की मांग पर मर्द से (अगर सम्पति वाला है) उसकी सम्पति का अच्छा खासा हिस्सा या (वो कर्मचारी है तो) तनख़्वाह की अच्छी खासी मात्रा रजिस्ट्री के जरिये बीवी के नाम करा ली जाए और फिर बीवी के अधिकार न देने की सूरत में

इससे सहारा लिया जाए।

2. निकाह के समय ही इंसाफ़ ना करने की परिस्थिति में अलग होने का अधिकार ले लिया जाए।

3. निकाह के समय शर्त रख दी जाए कि पति इस बीवी की मौजूदगी में दूसरा निकाह नहीं करेगा और इसके खिलाफ़ करने की सूरत में औरत को निकाह फस्ख करने (तोड़ने) का अधिकार दे दिया जाए (इमाम अहमद रह०) के (मसलक़ के मुताबिक) जैसा कि हाफिज इब्ने कय्यिम हम्बली रह० लिखते हैं:–

निकाह के वक़्त लगायी गई शर्तों में से इन शर्तों का पूरा करना ज़रूरी है या नहीं इस बारे में इख़्तिलाफ़ है। इमाम अहमद जिन शर्तों का पूरा करना जरूरी कहते हैं उनमें ये भी है कि दूसरी शादी इस बीवी की मौजूदगी में नहीं करेगा और ना लौंडी से ही इस तरह सम्बन्ध बनायेगा वरना फ़स्ख़ का अधिकार होगा।

नोटः– मगर किसी दूसरे इमाम के मसलक को अपनाने का फैसला माहिर उलमा के मश्वरे से सख़्त ज़रुरत के वक़्त ही किया जाए। मामूली हालतों में नहीं।

4. (जैसा कि पहले गुज़र चुका) इंसाफ ना करने और अधिकार अदा ना करने की सूरत में औरत को क़ाज़ी के ज़रिये निकाह फस्ख करवाने का अधिकार हासिल हो जाएगा।

.....जारी.....

❖❖❖

तीस हज़ार अशर्फ़ियाँ

एक थे इमाम रबीअ रहमतुल्लाह अलैहि। उनके पिता का नाम फ़र्रुख़ था। बनी उमैया की बादशाही के ज़माने में वे फ़ौज में नौकर थे। बादशाही हुक्म से वे बहुत सी लड़ाईयों पर भेजे गये। उस समय इमाम रबीअ रह0 अपने माँ के पेट में थे फ़र्रुख़ को इस सफ़र में सत्ताईस वर्ष लग गये। रबीअ रह0 पीछे ही पैदा हुए और पीछे ही इतने बड़े आलिम हुए। चलते समय उनके पिता ने अपनी पत्नी को तीस हज़ार अशर्फियाँ (सोने के सिक्के) दी थीं। उस हिम्मत वाली पत्नी ने सब धन उनके पढ़ाने लिखाने (दीन सिखाने) पर खर्च कर दिया। जब उनके पिता सत्ताईस वर्ष बाद लौट कर आये तो पत्नी से अशर्फियों के सम्बन्ध में पूछा। उन्होंने कहा, ''सब सुरक्षित रखी हैं।'' इस बीच हज़रत रबीअ रह0 मस्जिद में जाकर हदीस सुनाने में व्यस्त हो गये। फ़रुख़ ने यह तमाशा अपनी आँखों से देखा कि उनका बेटा दुन्या भर में पेशवा (दीन का रास्ता बताने वाला) हो रहा है तो ख़ुशी से फूले न समाये। जब घर लौट कर आये तो पत्नी से पूछा, ''बताओ तीस हज़ार अशर्फियाँ अच्छी हैं या यह नेमत?'' वे बोले, अशर्फियों की क्या गिनती है।''

अब पत्नी ने बताया, ''मैंने वे अशर्फ़ियाँ इस नेमत को प्राप्त करने पर खर्च कर दीं।''

उन्होंने ख़ुश हो कर कहा, ''ख़ुदा की कसम! तूने अशर्फ़ियाँ बरबाद नहीं कीं, बल्कि ऐसे अच्छे काम में लगा दीं।'' ◆◇◆

रोज़ों के बाद करने के ज़रूरी काम

शैख अबरार अहमद नदवी

अल्लाह तआला का इरशाद हैः— अल्लाह तआला तुम्हारे साथ आसानी चाहता है वह तुम्हारे साथ सख़्ती नहीं चाहता और इसलिए तुम गिनती पूरी करो और अल्लाह की बड़ाई बयान करो, इस पर कि उसने तुम्हें सत्यमार्ग दिखाया (हिदायत दी) और ताकि तुम शुक्र करने वाले बन जाओ। यह सूरः बकरा की आयत नं0 185 है जिसका रमज़ानुल मुबारक से सम्बन्ध है, रमजान का जिक्र सूरः बकरा आयत नं0 183 से शुरु हुआ है जिसमें रोज़े की पूरी तारीख़ उसकी फर्जियत, हिकमत, मस्लिहत, खैर व बरकत और उसमें रुख़्सत का बयान बड़ी स्पष्टता से किया गया है, इन आयतों में रोज़े के बाद साल के ग्यारह महीनों में क्या क्या काम करना है उसका जिक्र साफ साफ आ गया है, इरशाद है कि जब रमज़ान के 29 अथवा 30 दिन पूरे कर लो तो फिर अल्लाह की खूब बड़ाई बयान करो ताकि तुम सही मानों में उसके शुक्र गुजार बन जाओ, क्योंकि अल्लाह तआला ही ने आपको रोज़ों की तौफ़ीक़ दी और उसी की तौफीक पर ही आपने दिन में रोजा रखा, रात में तरावीह पढ़ी और रोज़े के समस्त आदाब का ख़्याल रखा, यह सिर्फ और सिर्फ अल्लाह का फजल है हमारा कोई कमाल नहीं, वरना कितने ही बड़े और ताक़तवर लोग बड़े बड़े तीर मार रहे हैं लेकिन उनको रोजा रखने की तौफीक़ नहीं हुई, बल्कि रमजान कैसे आया और कैसे गुज़र गया उनको इसकी ख़बर भी न हो सकी, यह तो आप पर अल्लाह तआला की खास नज़रे रहमत थी कि आपने रमज़ान का मुबारक महीना एहतिमाम से गुज़ार लिया है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि अपने कर्तव्यों के अदा करने के बाद फारिग हो गये, तक्वा की दौलत से मालामाल हो गये तो अब आपको फुर्सत है जिस तरह चाहें जैसे चाहें ज़िन्दगी गुज़ारें, अब आप रोज़े की समस्त बंदिशों से आज़ाद हैं। अगर हममें से किसी ने यह समझ लिया तो उसका सबक अधूरा है। कुर्आन की आयत से मालूम हुआ कि रोज़े पूरे करने के बाद अल्लाह तआला की अज़मत व बड़ाई बयान करना, और हर समय उसको याद रखना, यह हमारा दूसरा सबक़ है इसी से रोज़ा मुकम्मल होता है और हमारा रोजा अल्लाह की नज़र में कुबूल होता है, ईद की नमाज़ के लिए जब घर से निकलो तो अल्लाह की बड़ाई बयान करते एक रास्ते से जाओ और दूसरे रास्ते से आओ ताकि समाज के हर व्यक्ति के कान तक अल्लाह की बड़ाई व अजमत की आवाज़ पहुँच जाये, रोजे का अस्ल उद्देश्य यही है कि तक़्वा हर एक के ज़ेहन में रच बस जाये और अल्लाह की बड़ाई व अज़मत हर दिल में ऐसा समा जाये कि इन्सान के हर काम और हर बात से अल्लाह की बड़ाई का इज़हार व इकरार हो। ऐसा न हो कि गिनती के कुछ दिन नमाज़, रोज़ा, जिक्र, तिलावत की पाबन्दी में गुजारे जायें और फिर रोज़ों के खत्म होते ही दुन्या में बिल्कुल मस्त हो जायें, और मन चाही ज़िन्दगी गुज़ारने लगें, शैतान के चंगुल में फंस जायें और भैतिकता की गुलामी में जकड़ दिये जायें अगर ऐसा हुआ तो इसका सीधा और साफ मतलब यह हुआ कि हमारा रोज़ा अल्लाह के यहाँ कबूल नहीं हुआ, अल्लाह की पनाह हमें तो अब बस हर लम्हे अल्लाह की अजमत व बड़ाई का ही गुनगान करना है, और उसके आदेश के सामने दुन्या की हर चीज़ को कमतर समझना है, यही वह ज़रूरी काम हैं जो रोज़ों के बाद भी हमें करते रहना है, यही काम हैं जो हमें अल्लाह का शुक्रगुज़ार बन्दा बनायेंगे।

◆◇◆

दिलों को जोड़ने वाला मंत्र

इं0 जावेद इक़बाल

इंसान का शरीर विभिन्न अंगों से मिल कर बना है। आंख, नाक, कान, हाथ पैर इत्यादि। ये वो अंग हैं जो प्रत्येक व्यक्ति के शरीर में बाहर से नजर आते हैं। इन के अतिरिक्त शरीर के भीतर के , बाहर से नजर न आने वाले अनेक अंगों की बड़ी जटिल और पेचीदा प्रणाली हमारे शरीर के अंदर काम कर रही है जिस के विषय में आधुनिक युग के चिकित्सा विज्ञान को बहुत कुछ जान लेने के बावजूद बहुत कुछ जानना अभी शेष है, इस विषय पर दुनिया भर में अनेक शोध कार्य निरंतर चल रहे हैं । इसी लिए तो कुरआन पाक में फरमाया गया है कि निकट भविष्य में हम परिमंडल में और स्वयं तुम्हारे भीतर अपनी निशानियां दिखायेंगे। (41–53)

हम जैसे साधारण लोगों के लिए तो बाहर से नजर आने वाले अंगों पर ही गौर फिक्र कर लेना बड़ी बात है । हम देखते हैं कि ये सभी अंग एक दूसरे के प्रतिरोधी हैं ।

आंख देखती है मगर सुनती नहीं , नाक सूंघती है मगर देखती नहीं और कान सुनते हैं मगर देखते या बोलते नहीं । इसी तरह हाथ पकड़ने के अनेक काम करते हैं मगर दौड़ते नहीं , दौड़ने का काम टांगों और पैरों के जिम्मे है। देखा आपने प्रत्येक अंग दूसरे अंगों का प्रतिरोधी होते हुए भी आपस में शत्रुता नहीं रखते ,वे सब एक दूसरे के सहायक हैं, मित्र समान हैं। इंसान का दिमाग है जो इन सब को नियंत्रित करता है, सब को जोड़ कर रखता है। एक पल की देर किए बिना सभी अंगों को आपसी सहयोग के लिए चौकस रखता है। किसी के सर पर डंडा मारने के लिए उठाइए, सामने वाले का हाथ तुरंत अपने सर के बचाव में उठेगा। एक पैर में घाव होगा तो पूरा शरीर पीड़ा को महसूस करेगा। निष्कर्ष यह कि दिमाग़ शरीर के सभी अंगों को नियंत्रित करता है। मगर एक चीज़ और है जो दिमाग़ को भी जागरूक रखने का काम करती है और वह है आत्मा यानी रूह, जिस का ज्ञान ख़ुदा ने किसी को नहीं दिया है, बस इतना ही कहा जा सकता है कि रूह अल्लाह का हुक्म है, आदेश है जो पूरे शरीर को जोड़ कर रखती है, उसे क्रियाशील बनाती है।

किसी भी चीज़ के टुकड़ों को जोड़ने के लिए किसी तीसरी चीज़ की ज़रूरत होती है। लकड़ी के टुकड़ों को जोड़ने के लिए कील की, लोहे के टुकड़ों को जोड़ने के लिए वैल्डिंग की, कागज के टुकड़ों को जोड़ने के लिए गोंद की ज़रूरत होती है। इसी तरह शरीर के सभी अंगों को दिमाग़ से जोड़े रखने के लिए जो चीज़ मुख्य रोल अदा करती है वह रूह है।

अब आइए देखते हैं कि समाज को जोड़ने के लिए किस चीज़ की ज़रूरत होती है? समाज के विभिन्न वर्गों में

आपसी सहयोग, सहमति भाईचारा, मुहब्बत के लिए ज़रूरत होती है ईमान की। ईमान जितना शुद्ध होगा मजबूत और पुख़्ता होगा समाज के विभिन्न वर्ग उतने ही एक दूसरे के निकट होंगे, उनमें मतभेद उसी अनुपात में कम होंगे। जब ईमान में कमज़ोरी आती है, और अवश्य ही समय समय पर आती है, क्योंकि अल्लाह के रसूल सल० फरमा चुके हैं कि ईमान को ताज़ा करते रहा करो यह घटता बढ़ता रहता है । ईमान की कमजोरी के कारण दिलों में जंग लग जाता है तब वह दिलों को जोड़ने में नाकाम रहता है। जिस तरह जंग लगी कील प्रभावी नहीं होती इसी तरह कमजोर ईमान , ईमान वाले दिलों को जोड़ने में सफल नहीं होता और वे विभिन्न समूहों में , छोटी छोटी टुकड़ियों में बंटे जाते हैं। बद– अहदी , हसद , तकब्बुर ,अना नाइंसाफी जैसी नैतिक बुराइयों के अलावा बिदअत और शिर्क तक बात पहुंच जाती है।

रसूलल्लाह सल० अक्सर फरमाया करते थे कि जिस में अमानतदारी नहीं उस में ईमान नहीं और जिस में अहद की पाबंदी नहीं उसका दीन में कोई हिस्सा नहीं। आप सल० ने यह भी फरमाया है कि मोमिन लअन–तअन करने वाला नहीं होता और न गालम गलौज करने वाला होता है। इस क़िस्म की हदीसों का मतलब यह तो नहीं है कि ऐसे ऐसे काम करने वाले लोग इस्लाम से ही निकल जाते हैं, नहीं, बल्कि यह समझना चाहिए कि इस तरह के काम ईमान वाले व्यक्ति को शोभा नहीं देते इन से हर मुसलमान को बचना चाहिए। मगर यह भी एक शर्मिन्दा करने वाली हक़ीक़त है कि मुस्लिम इलाकों में गन्दी गन्दी गालियों का चलन बहुत ज़ियादा है। आज बदअहदी और भ्रष्ट मानसिकता मुसलमानों में अन्य कौमों की अपेक्षा कुछ ज़ियादा ही है, जो ईमान की कमज़ोरी का खुला सबूत है ।

इसके अलावा हम अपने समाज में साफ देख रहे हैं कि जरा जरा सी बात पर एक समूह दूसरे समूह पर कुफ्र का फरमान जारी करने से तनिक भी नहीं हिचकिचाता। जबकि हदीस में है कि यदि कोई व्यक्ति किसी मोमिन के बारे में वह बात कहे जो उस में न हो तो अल्लाह तआला उसे (इल्जाम लगाने वाले को) जहन्नम की पीप में डाल देगा और वह सजा पूरी होने तक वहां पड़ा रहेगा, या फिर अपनी ग़ल्ती से दुनिया ही में तौबा कर ले । निष्कर्ष यह कि मुत्तहिद होने के लिए मज़बूत और शुद्ध ईमान बहुत ज़रूरी है। जब ईमान मज़बूत होगा तब इंसान नैतिक बुराइयों से महफूज़ होगा, आपस में प्रेम, भाईचारा, हमदर्दी इत्यादि बढ़ेगी और तब क़ौम संगठित (मुत्तहिद) हो सकेगी ।

जब हम मुत्तहिद होंगे तब अपनी सारी ताकत दीन की दावत दूसरों तक पहुंचाने में लगा सकेंगे और तब ही दूसरों को हमारी बातें प्रभावित कर सकेंगी ।

❖❖❖

आधुनिक चुनौती और इस्लाम

डॉ0 उबैदुर्रहमान नदवी

इस्लाम और उसकी विचारधारा को बदनाम करने के लिए एक सुनियोजित अन्तर्राष्ट्रीय योजना है उसे धरातल से मिटाने की कोई कसर नहीं छोड़ी जा रही है। छः प्रश्न हैं जो अधिकांश दूसरों की ओर से पूरी दुनिया में इस्लाम और उसके अनुयाइयों को बदनाम करने के लिए उठाए जाते हैं–

1. इस्लाम शिक्षा का विकास नहीं चाहता।
2. इस्लाम महिलाओं को उचित अधिकार नहीं देता।
3. इस्लाम स्वच्छता, सफ़ाई, पवित्रता को पसन्द नहीं करता।
4. इस्लाम आतंकवाद को बढ़ावा देता है।
5. इस्लाम तलवार से फैला और यह रुजहान अभी भी ग़ालिब है।
6. इस्लाम पुराना हो चुका है मानव जीवन की उन्नति और समृद्धिशाली में रुकावट और बाधा है।

उपरोक्त प्रश्न सर्वथा ग़लत और इस्लामी स्प्रीट के विरुद्ध हैं। वास्तविकता यह है कि इस्लाम समस्त धर्मों में सबसे अधिक उदारता और समानता पर आधारित है, यह एक खुला रहस्य है कि मानव जाति के इतिहास में छठी शताब्दी ईस्वी सबसे अंधकार युग था, समाज नैतिक पतन में डूब चुका था, यह हज़रत मुहम्मद सल्ल0 थे, जिन्होंने उन्हें तबाही व बरबादी के समुद्र में डूबने से बचा लिया। इस वास्तविकाता से इनकार नहीं कि इस्लाम का मूल उद्देश्य इन्सानों की रूह को अन्धविश्वास, दुष्कर्म, पथ भ्रष्ठा और गुलामी से नजात दिला कर मानवता को उच्च कोटि पर पहुँचाना, और वास्तविक सफलता का रास्ता दिखाना है, पवित्र कुर्आन कहता है ''तुम बेहतरीन उम्मत हो, सर्वोत्तम समुदाय हो जो इन्सानों के लिए वजूद में लाये गये हो, तुम नेकी का आदेश देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो''।

(सूरः आले इमरान 11)

पहले प्रश्न का उत्तरः जाहिलयत काल में शिक्षा की ओर बहुत कम ध्यान दिया जाता था, यह हज़रत मुहम्मद सल्ल0 थे जिन्होंने ज़िन्दगी की वास्तविकताओं को समझने के लिए एक अनिवार्य साधन के रूप में शिक्षा को प्रयोग किया, नबी करीम सल्ल0 पर पहली ''वहय'' (ईश्वाणी) ''इक़रा बिस्मे रब्बिकल्लज़ी ख़लक़'' पढ़ो अपने रब के नाम से) थी, इसी प्रकार हदीस शरीफ़ का संग्रह है जिसमें नबी करीम सल्ल0 के उपदेश हैं, हदीस की हर प्रति में एक अध्याय है जिसे किताबुल इल्म कहा जाता है, जो इल्म और तालीम का ख़ज़ाना है। एक अनुमान के अनुसार ''इल्म'' का शब्द कुर्आन शरीफ़ में सात सौ पचास मर्तबा प्रयोग हुआ है, रसूलुल्लाह सल्ल0 का फ़रमान है ''इल्म का हासिल करना हर

मुसलमान मर्द, औरत पर फ़र्ज़ है, आप सल्ल0 ने फ़रमाया ''गोद से लेकर कब्र तक इल्म हासिल करो, अल्लाह के नबी सल्ल0 ने फ़रमाया जिसने बेटियों को पाला पोसा और उनको अच्छी शिक्षा दी और शादी के बाद भी देख भाल की, अल्लाह ने उसका जन्नत में दाख़िला यक़ीनी बना दिया'' इस्लाम की प्रमुख विशेषताओं में से यह है कि उसने दीन और इल्म के बीच क़रीबी और पवित्र सम्बन्ध स्थापित किया है। इस वास्तविकता को नकारा नहीं जा सकता कि इस्लाम ही ऐसा धर्म है जिसने पहली बार अपने मानने वालों के लिए शिक्षा को अनिवार्य किया, जब कि किसी और धर्म ने इल्म के हासिल करने को इतनी अहमियत नहीं दी, कुर्आन पाक में इल्म की विभिन्न विषयों पर अनेक आयात मौजूद हैं, वह आयतें इन विषयों से सम्बन्धित हैं:–

एस्ट्रोनॉमी *(Estronomee)* बॉटनी, जियोलोजी, मैथमेटिक्स, इकोनामिक्स आदि, कुर्आन के अनुसार खुदा समस्त ज्ञानों का स्रोत है और उसी ने इन्सान को ज्ञान प्रदान किया, कुछ चीज़ों का ज्ञान अल्लाह ने कुर्आन द्वारा नबी करीम सल्ल0 पर नाज़िल फ़रमाया जो अख़लाक़ और ईमान से सम्बन्धित है, कुछ ज्ञान और विद्या इन्सान अपने परिश्रम से प्राप्त करता है।

दूसरे प्रश्न का उत्तरः–

इस्लाम के आने से पहले औरतें, जानवर समान जीवन व्यतीत कर रही थीं, उनका समाजी शोषण होता था, व्यावसायिक माल के रूप में उनका क्रय विक्रय किया जाता था, कोई उनकी सम्मानीय हैसियत नहीं थी, सबसे बढ़ कर एक लड़की की पैदाइश को लानत समझा जाता था, कुर्आन पाक इस हक़ीक़त को बड़े अच्छे अंदाज़ में बयान करता है, ''जब उनमें से किसी को लड़की के पैदाइश की ख़बर पहुँचती है तो उसका चेहरा सियाह हो जाता है और वह छुपे हुए ग़म से मर जाता है'' (16/58)।

इस्लाम ही ने उनका स्थान समाज में ऊँचा किया इस्लाम के नज़दीक़ दुनिया और उसमें मौजूद तमाम चीज़ें बहुमूल्य हैं लेकिन दुनिया की सबसे बहुमूल्य चीज़ नेक औरत है, शुरु ही में इस्लाम ने महिलाओं को बहुत ज़ियादा महत्व दिया। अजीब बात है कि सामान्य रूप से यह ख़्याल किया जाता है कि महिला की स्वतंत्रता का आन्दोलन 19वीं और 20वीं शताब्दी के बीच में शुरु हुआ, लेकिन हक़ीक़त यह है कि अल्लाह के अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने 1400 साल पहले इसकी हिमायत की थी। इस्लाम ने महिलाओं को हर प्रकार के अधिकार प्रदान किये, चाहे वह समाजी हों तालीमी हों, इज़्दवाज़ी (दामपत्य) हों, अर्थिक हों, एक बार एक औरत नबी सल्ल0 के पास आई और शिकायत की ''मेरे बाप ने मुझे चचाज़ाद भाई से शादी करने पर मजबूर किया ताकि वह अपना दर्जा ऊँचा कर सकें। नबी करीम सल्ल0 ने उससे कहा कि वह शादी ख़त्म करने के लिए आज़ाद है, और जिससे शादी करना चाहती है उसे चुन सकती है उसने जवाब दिया ठीक है, मैं अपने बाप की पसन्द को मन्जूर करती हूँ, लेकिन मेरा उद्देश्य लोगों को बताना था कि

बाप को यह हक़ नहीं है कि वह निकाह के मुआमले में हस्तक्षेप करे''।

मालूम हो कि 21वीं शताब्दी की चौखट पर हम क़दम रख चुके हैं जिसे साइंस और टेक्नोलॉजी की शताब्दी समझा जाता है, लेकिन ऐसा लगता है कि हम अंधकार युग की ओर लौट रहे हैं, पुराने ज़माने में लोग बच्चियों को ज़िन्दा दफ़्न कर देते थे और आज हम उन्हें गर्भाशय ही में ज़िन्दा मार देते हैं इन दिनों यह एक साधारण सी बात है। वास्तव में यह एक घिनौना काम है, इस अवसर पर हमें नबी करीम सल्ल0 की नसीहत याद आती है, जब कुर्आन पाक की आयत (वह किस जुर्म में मारी गई) आई।

(सूरः अल इन्फ़ितार–9)

नबी करीम सल्ल0 अपने साथियों के साथ मक्के की गलियों में निकल आये और लोगों से अपील की, कि बच्चियों के क़त्ल के पुराने रीति रिवाज को छोड़ दें फिर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई ''हमने आदम की औलाद को इज्ज़त दी है'' इसलिए यह प्रश्न कुर्आनी आदेश और नबवी आदेश से अनभिज्ञता का परिणाम है। मुहम्मद सल्ल0 ने महिलाओं के महत्व को बताते हुए फ़रमाया ''जन्नत माँओं के पैरों तले है'' आप सल्ल0 ने फरमाया ''जो दो लड़कियों की परवरिश पालन पोषण उस समय तक करे कि वह जवान हो जायें तो क़यामत के दिन जब वह आयेगा तो मैं और वह इस तरह होंगे, आप ने अपनी उंगलियों को मिला दिया''। अल्लाह तआला ने फ़रमाया ''लोगो अपने रब से डरो जिसने तुमको एक जान से पैदा किया और उसी जान से उसका जोड़ा बनाया और उन दोनों से बहुत मर्द और औरत दुनिया में फैला दिये, उस अल्लाह से डरो जिसका वास्ता दे कर तुम एक दूसरे से अपने हक़ मांगते हो और नाते रिश्तों के सम्बन्ध को बिगाड़ने से बचो, यक़ीन जानो कि अल्लाह तुम पर निगरानी कर रहा है''।

(सूरः निसा–1)

इस्लाम ने औरतों और बेटियों को माँ–बाप और शौहरों की विरासत में भागीदार बनाया और अपनी समपत्ति को प्रयोग करने का पूर्ण अधिकार दिया, इस्लाम में औरतों को परदा करने का आदेश है, इस्लाम विरोधी परदे को औरत की उन्नति और स्वतंत्रता में बाधा समझते हैं यह बिल्कुल ग़लत है, यह बड़ी भ्रांति है परदे की पाबन्दी न होने की वजह से आये दिन औरतों की आबरू पर आक्रमण होता है, और छेड़ छाड़ की घटनायें बराबर होती रहती हैं, कष्ट जनक और लज्जाजनक बात यह है कि आए दिन सामूहिक बलात्कार की घटनाएं होती हैं जिसके गवाह प्रकाशित होने वाला समाचार पत्र हैं। कुर्आन कहता हैः– ''ऐ नबी! अपनी पत्नियों और बेटियों और ईमान वालों की औरतों से कह दो कि अपने ऊपर अपनी चादरों से पल्लू लटका लिया करें, यह ज़ियादा उचित तरीक़ा है ताकि वह पहचान ली जायें और न सताई जाएं। अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दयावान है''।

(सूरः अहज़ाब–59)

एक आरोप यह लगाया जाता है कि इस्लाम में स्वच्छता और सफ़ाई को पसन्द नहीं किया जाता है, यह निराधार बात है, दूसरे धर्मों की अपेक्षा इस्लाम में विस्तार और बारीकी से स्वच्छता और पवित्रता के आदेश दिये गये हैं, अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया पवित्रता आधा ईमान है शरीर की पाकी, कपड़ों की पाकी, जगह की पाकी जब तक यह पवित्रता और सफ़ाई न होगी ''नमाज़'' जैसी इबादत अल्लाह के यहाँ स्वीकार नहीं, स्वच्छता और पवित्रता पहली शर्त है।

इस्लाम और मुसलमान को बदनाम करने के लिए आतंकवाद को उससे जोड़ा जाता है, हालांकि इस्लाम का आतंकवाद से दूर दूर का सम्बन्ध नहीं, जबकि कुर्आन कहता है, ''ज़मीन में बिगाड़ पैदा न करो जबकि उसका सुधार हो चुका है''।

(सूरः आराफ़–56)

इस्लाम विरोधियों ने यह भी आरोप लगाया कि इस्लाम तलवार द्वारा फैला, यह वही लोग कह सकते हैं जिन्होंने वास्तव में इस्लाम को समझा नहीं, इस्लाम की बुन्याद मानव सम्मान पर है, उसके सिद्धान्त न्याय पूर्वक हैं, इस्लाम के प्रचार और प्रसार के सिलसिले में कुर्आन की यह आयत करीमा कितनी स्पष्ट और खुली हुई है, पढ़िये और ग़ौर कीजिए, ''दीन के मामले में कोई ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं, सही बात ग़लत विचारों से अलग छाँट कर रख दी गई हैं। अब जिस किसी ने बढ़े हुए फ़सादी (सरकश शैतान) का इन्कार करके अल्लाह को माना, उसने एक ऐसा मज़बूत सहारा थाम लिया जो कभी टूटने वाला नहीं और अल्लाह (जिसका सहारा उसने लिया है) सब कुछ सुनने वाला और जानने वाला है''।

(अल–बक़रा आयत–256)

''आप कह दीजिए सल्ल0 सच्ची बात है तुम्हारे रब की ओर से, फिर जो कोई चाहे माने और जो कोई चाहे न माने''।

(सूरः कहफ़– 29)

इस्लाम एक बौद्धिक, ज्ञान विज्ञान, सदाचार और मानव उत्थान का धर्म है। यह जन–सामान्य से अपेक्षा करता है कि सभी शिक्षित और सदाचारी बनें। यह कोई वर्ग विभाजन या कर्म–विभाजन नहीं करता बल्कि अपने हर मानने वाले अनुयायी के लिए भलाई, कल्याण और उद्धार की सभी राहें खोल देता है। पवित्र कुर्आन में है, ''पढ़ो अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया... जिसने क़लम के द्वारा शिक्षा दी। मनुष्य को वह ज्ञान प्रदान किया जिसे वह न जानता था''।

(सूरः अलक़ 1,4,5)

अल्लाह के अन्तिम रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनेक हदीसों में शिक्षा हासिल करने और उसके फैलाव की शिक्षा एवं ऐसा करने वालों के लिए शुभ सूचनाएं दी गई हैं। इल्म सीखो और दूसरों को सिखाओ (बैहक़ी)। एक हदीस में ये शब्द हैं ''जो इल्म हासिल करने के लिए घर से निकले, वह अल्लाह की राह में है, जब तक वह वापस न आये''। (तिरमिज़ी)

❖❖❖

कुछ आम मालूमात

–फ़ौज़िया सिद्दीक़ा बी0ए0

हमारी ज़मीन से करोड़ों किलो मीटर दूर सूरज एक आग का बहुत ही बड़ा गोला है वह अपने सय्यारों के साथ एक तरफ़ को तेज़ी से चल रहा है मगर वह ज़मीन के गिर्द घूम कर दिन रात नहीं बनाता है, ज़मीन भी एक बड़ा गोला है इसके दोनों सिरे सेब की तरह चिपटे हैं ज़मीन के गोले का बीचो बीच का हिस्सा पच्चीस हज़ार मील लगभग चालीस हज़ार आठ सौ किलो मीटर है। ज़मीन अपनी धुरी पर चौबीस घण्टों में एक चक्कर पूरा करती है ज़मीन का जो हिस्सा सूरज के सामने आता है वहां दिन हो जाता है और जो हिस्सा उसके पीछे होता है वहां रात होती है। इस तर ज़मीन के उत्तर दक्खिन के आधे गोले पर दिन और आधे पर रात रहती है यह दिन रात हर वक़्त घूमते रहते हैं। ज़मीन की रफ़्तार लग्भग एक हज़ार सात सौ किलो मीटर प्रति घण्टा है। इस तरह वह एक मिनट में लगभग 28 किलो मीटर भागती है जिस के नतीजे में लखनऊ में अगर सूरज 6 बजे दिखता है तो लखनऊ से ठीक पूरब 28 किलो मीटर दूरी पर एक मिनट पहले सूरज दिखेगा, और इसी हिसाब से 54 किलो मीटर पर दो मिनट पहले सूरज दिखेगा और इसी हिसाब से लखनऊ से ठीक पश्चिम 28 किलो मीटर पर एक मिनट बाद और 56 किलो मीटर पर दो मिनट बाद सूरज दिखेगा।

हमारी ज़मीन का गोला एक तरफ़ को झुका हुआ है, हमारी ज़मीन जहां अपनी धुरी पर लट्टू की तरह घूमती है वह सूरज के गिर्द भी नाचते हुए घूमती है। सूरज के गिर्द उसका एक चक्कर एक साल में पूरा होता है और ज़मीन के झुकाव के सबब ज़मीन के गोले पर मौसम बनते हैं। ज़मीन के उत्तरी आधे गोले पर यानी अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर, जनवरी, फरवरी और मार्च में जब जाड़े का मौसम आता है तो दक्खिनी आधे गोले पर गर्मी का मौसम रहता है और जब अगस्त और सितम्बर में गर्मी का मौसम होता है तो दक्खिनी आधे गोले पर जाड़े का मौसम रहता है।

हिजरी साल ईस्वी साल से 10 दिन 11 दिन कम रहता है इसलिए मौसम हिजरी महीनों के मुताबिक़ नहीं आते यही वजह है कि रमज़ान कभी जाड़े में आते हैं तो कभी गर्मी में।

चाँद भी एक गोला है, चाँद ज़मीन के गिर्द चक्कर लगाता है, ज़मीन के गिर्द उसका चक्कर 29 या 30 दिनों में पूरा होता है, चाँद का पहला महीना मोहर्रम है। ज़िलहिज्ज की 29 या 30 तारीख़ को जब चाँद दिखता है तो हिजरी साल शुरुअ़ होता है। पहला चाँद सूरज डूबने के वक़्त दिखता है इसलिए चाँद की तारीख़ मग़रिब के वक़्त से शुरुअ़ होती, और मग़रिब ही पर ख़त्म होती है। इसलिए हिजरी कलेण्डर के दिनों में पहले रात आती है फिर दिन आता है। जब कि अंग्रेज़ी कलेण्डर के दिन 12 बजे रात से शुरु होते हैं, लेकिन हिन्दी कलेण्डर के दिन सूरज निकलने के वक़्त शुरु होते हैं। विक्रमी कलेण्डर का महीना चाँद की 14 या 15 तरीख़ से यानी पूर्ण मासी के बाद शुरुअ़ होता है यानी विक्रमी कलेण्डर भी चाँद से मुतअल्क़ि है लेकिन विक्रमी कलेण्डर चौथे साल मल मास लगा कर 13 दिनों का कर दिया जाता है इस तरह हिन्दी कलेण्डर ईस्वी कलेण्डर के मुताबिक़ हो जाता है और मौसम हिन्दी महीनों के भी मुताबिक़ आते हैं। ◆◇◆

उर्दू सीखये —इदारा

नीचे लिखे उर्दू क़े जुमले पढिये,
मुश्किल आने पर बाद में लिखे हिन्दी जुमले से मदद लीजिए

رمضان کا مہینہ پا کر ہم لوگ بہت خوش ہوئے

ہم لوگوں نے رمضان کے پورے مہینے کا روزہ رکھا

ہم لوگوں نے نماز، روزہ، تراویح، تہجّد کا اہتمام کیا

سحری، افطاری بھی سنّت کے مطابق کرنے کی کوشش کی

تلاوت، ذکر، توبہ و استغفار کا بھی خوب اہتمام کیا

ہم لوگوں کو یہ توفیق اللہ کے فضل سے حاصل ہوئی

اللہ ہمارے ان نیک اعمال کو قبول فرمائے اور شکر کرنے والا بنائے

اور زندگی بھر ان اعمال پر جمے رہنے کی توفیق سے نوازے

اللہ اپنے اور بندوں کے حقوق ادا کرنے والا بنائے

रमज़ान का महीना पा कर हम लोग बहुत ख़ुश हुए
हम लोगों ने रमज़ान के पूरे महीने का रोज़ा रखा
हम लोगों ने नमाज़, रोज़ा, तरावीह, तहज्जुद का एहतिमाम किया
सेहरी, इफ़्तारी भी सुन्नत के मुताबिक़ करने की कोशिश की
तिलावत, ज़िक्र, तौबा व इस्तिग़फ़ार का भी ख़ूब एहतिमाम किया
हम लोगों को यह तौफ़ीक़ अल्लाह के फ़ज़्ल से हासिल हुई
अल्लाह हमारे इन नेक आमाल को क़बूल फरमाये और शुक्र अदा करने वाला बनाये
और ज़िन्दगी भर इन आमाल पर जमे रहने की तौफ़ीक़ से नवाज़े
अल्लाह अपने और बन्दों के हुकूक अदा करने वाला बनाये

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ - ٹیگور مارگ
لکھنؤ - ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 25/12/2021 तारीخ

स्टॉफ़ क्वाटर्स की तामीर के लिए अपील

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा हज़रत मौलाना सैय्यद मो0 राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी व दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, दारुल उलूम और उसकी ब्रांचों में इल्मी तालीमी सिलसिला बराबर जारी है, टीचर्स व स्टॉफ अपनी ज़िम्मेदारियों को अंजाम दे रहे हैं, टीचर्स व स्टॉफ की अधिकता की वजह से दारुलउलूम में उनके रहने की गुंजाइश नहीं रही तो दारुलउलूम के मेन कैम्पस के अलावा माहद सिकरौरी में स्टॉफ क्वाटर्स और माहद के करीब नदवा कालोनी की तीन मंज़िला बिल्ड़िंग तामीर हुई, मगर अब भी स्टॉफ के लिए क्वाटर्स की कमी बहुत ज़ियादा महसूस की जा रही है, इस सूरते हाल की वजह से नदवा मेन कैम्पस से करीब मुहल्ला मकारिम नगर में कुछ और स्टॉफ क्वाटर्स बनाने का फैसला किया गया है, और अल्लाह तआ़ला की मदद के भरोसे पर यह तामीर शुरु कर दी गयी है।
नये स्टॉफ क्वाटर्स की यह बिल्डिंग तीन मंजिला होगी, जिसमें 9 फेमली क्वाटर्स होंगे, इसकी तामीर पर 1,15,00000/— (एक करोड़ पंद्रह लाख) रूपये के खर्च का अंदाज़ा है, जो इंशाअल्लाह अहले खैर हज़रात के सहयोग से पूरा होगा।

हम उम्मीद करते हैं कि आप इस अहम ज़रूरत की ओर फौरन तवज्जोह फरमायेंगे और नदवतुल उलमा के कारकुनों का हाथ बटायेंगे।

हमें अल्लाह तआला की ज़ात पर पूरा भरोसा है कि उसकी मदद से यह काम मुकम्मल होगा।

मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें:
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजें:
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)

बरा—ए—करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं0 **7275265518** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नदवतुल उलमा
STATE BANK OF INDIA MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)
—:तअ़मीरः—
A/C No. 10863759733

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961**के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/ Website: www.madwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

RNI No. UPHIN/2002/0795
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2021 To 2023
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 21 - Issue 03

Office Timing : 7:30 AM To 1:15PM
Tel.:(0522) 2740406
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

RK JEWELLERS
Renowned Name in Jewellery

Haji Abdul Rauf Khan
Haji Mohd. Faheem Khan
Mohd. Owais Khan

Shop : Sarai Bans, Akbari Gate,
Chowk, Lucknow - 226003
Ph.: 0522-2267910
+91-9415108039

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE

Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.

विशेषज्ञ

पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग

24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE

G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983